चन्दामामा
मार्च १९६२

WITH AN EXPERIENCE OF
OVER 25 YEARS

THE

B. N. K. PRESS

PRIVATE LIMITED,

"CHANDAMAMA BUILDINGS"

MADRAS-26 (PHONE: 88851-4 LINES)

OFFER
BEST
SERVICES

IN

COLOURFUL PRINTING &
NEAT BLOCK MAKING

*

*FAMOUS FOR PRECISION
AND PROMPTITUDE*

अब
चमकीले
नये डिब्बे में

जे. बी.
साल्टो
बिस्कुट

J.B.MANGHARAM'S
Salto
Biscuits

जे. बी. मंघाराम एण्ड कम्पनी
ग्वालियर

प्रफुल्ल
मुख-कान्ति के लिए
Remy
BORATED
TALCUM POWDER
रेमी
टाल्कम पाउडर

त्वचा की चमक एवं
कोमलता के लिए

हिमानी ग्लिसरिन साबुन

हिमानी प्रा. लि. कलकत्ता - २

मनभाती और साथ में पौष्टिक भी।
आज चख कर देखिये और आप
हर रोज इसे खूब खाना चाहेंगे।

आप के मनपसंद ६ स्वाद

- पाइनेपल
- औरेंज
- चेरी
- चौकलेट
- मद्रास
- लैमन

सभी का वास्तविक मनोरंजन करनेवाली स्वीट्स

कलकत्ता
कन्फेक्शनरी वर्क्स
बम्बई—११

CC

सर में दर्द ?

ज़रा-सा **अमृतांजन**

आपको तुरन्त

आराम पहुंचायेगा

सर्दी-खाँसी, बुखार और गठियावात की तकलीफों से अपने परिवार को बचाइए। ज़रा-सा **अमृतांजन** तकलीफ मिटाने के लिए काफी है इसलिए एक शीशी महीनों चलती है।

AMRUTANJAN

अमृतांजन लिमिटेड, मद्रास-४

इसके अलावा बम्बई-१, कलकत्ता-१ और नई दिल्ली-१

दक्षिण भारत की प्रसिद्ध सिनी सितारा

टी. कृष्णकुमारी

हमेशा "श्री वेन्कटेश्वर"
साड़ियाँ ही चाहती हैं।

समझदार स्त्रियों द्वारा चाही जानेवाली "श्री वेन्कटेश्वर" रेशमी साड़ियाँ, सुन्दर रंगों और उत्तम नमूनों के लिए और श्रेष्ठ स्तर के लिए अतुल्य हैं। हर तरह की साड़ियाँ मिलती हैं। हर अवसर पर वे अपूर्व मनोहर शोभा प्रदान करती हैं। यही नहीं आपके आराम के लिए हमारी दुकान ही एक ऐसी है, जो एयर कन्डिशन्ड है। यहाँ आकर आप सन्तुष्ट होंगे और इसे कभी न भूलेंगे।

श्री वेन्कटेश्वर

सिल्क पॅलेस

स्त्रियों के सुन्दर वस्त्रों के लिए
मनोहर स्थल

284/1. चिकपेट, बेन्गलूर-2.

फोन: 6440

टेलिग्राम: "ROOPMANDIR"

'सात बेटों के बराबर है
मेरा सपूत...'

'कपड़ों की धुलाई की लीजिए तो हमारा मुन्ना सात बेटों के बराबर है—इतने कपड़े मैले करता है वह! लेकिन सनलाइट के कारण मुझे कपड़े धोना बिल्कुल आसान हो गया है।

'सनलाइट जैसे शुद्ध और भरपूर झागवाले साबुन ही से कपड़ों की इतनी अच्छी धुलाई इतने आराम से हो सकती है! फिर इसमें आश्चर्य ही क्या अगर मैं अपनी सारी धुलाई सनलाइट से करती हूं।'

नई दिल्ली की श्रीमती कमला वाधवानी कहती हैं: घरभर की धुलाई के लिए सनलाइट के समान दूसरा साबुन नहीं।

आपके कपड़ों की सर्वोत्तम सुरक्षा के लिए
हिन्दुस्तान लीवर ने बनाया

S. 31-X29 HI

Statement about ownership of CHANDAMAMA (Hindi)
Rule 8 Form IV), Newspapers (Central) Rules, 1956

1. *Place of Publication*	:	'CHANDAMAMA BUILDINGS' 2 & 3, Arcot Road, Vadapalani, Madras-26
2. *Periodicity of Publication*	:	MONTHLY 1st of each Calendar month
3. *Printer's Name*	:	B. NAGI REDDI, Managing Director, The B. N. K. Press (Pvt.) Ltd.
Nationality	:	INDIAN
Address	:	2 & 3, Arcot Road, Vadapalani, Madras-26
4. *Publisher's Name*	:	B. VENUGOPAL REDDI, Managing Partner, Sarada Binding Works
Nationality	:	INDIAN
Address	:	2 & 3, Arcot Road, Vadapalani, Madras-26
5. *Editor's Name*	:	CHAKRAPANI (A. V. Subba Rao)
Nationality	:	INDIAN
Address	:	2 & 3, Arcot Road, Vadapalani, Madras-26
6. *Name & Address of individuals who own the paper*	:	SARADA BINDING WORKS : PARTNERS,

1. Sri. B. Venugopal Reddi.
2. Smt. B. Seshamma.
3. Smt. B. Rajani Saraswathi.
4. Smt. A. Jayalakshmi.
5. Sri. B. L. N. Prasad.
6. Sri. B. Viswanatha Reddi.
7. ★ Kumari. B. Sarada.
8. ★ Sri. B. Venkatrama Reddi.

★ MINORS

I, B. Venugopal Reddi, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

1st March, 1962

B. VENUGOPAL REDDI,
Signature of the Publisher

चन्दामामा

संचालक : चक्रपाणी

हम कुछ काल से "चन्दामामा" में "पाठकों के मत" स्तम्भ दे रहे हैं। इस स्तम्भ में बहुत से पाठक बहुत कुछ लिख भी रहे हैं।

पर हम पाते हैं कि वे "चन्दामामा" के विषय में अपना मत ही देते हैं और कई अपने पत्रों में एक ही बात लिखते हैं। न हम पिष्टपेषण चाहते हैं, न पुनरावृत्ति ही।

अतः अच्छा होगा, यदि पाठक "चन्दामामा" में प्रकाशित सामग्री के बारे में ही प्रति मास अपने मत भेजा करें।

वर्ष : १३ | मार्च १९६२ | अंक : ७

भारत का इतिहास

६ ई. पू. में बिम्बसार के काल में ही, फारस के सम्राट सैरस ने गान्धार देश पर आक्रमण किया और कापिश नगर को ध्वंस कर दिया था। सिन्ध नदी के पश्चिम के गान्धार देश को उसने अपने साम्राज्य में मिला लिया। पहिले का गान्धार देश, सिन्धु नदी के पूर्व की ओर और पश्चिम की ओर फैला हुआ था। जो भाग पश्चिम में था, उसे पुष्कलावती कहा जाता था। उसके पूर्व में तक्षशिला थी। यह राज्य सम्पन्न और सुपरिपालित था। इसकी राजधानी रावलपिण्डी से २० मील की दूरी पर वायव्य दिशा में थी। इस नगर का व्यापार संसार में प्रसिद्ध था। व्यापार से भी अधिक इसकी प्रसिद्धि शिक्षा के क्षेत्र में थी, यह बड़ा विद्या केन्द्र था। कहा जाता है कि महाभारत प्रप्रथम तक्षशिला में ही पढ़ा गया था।

तक्षशिला के उत्तर में ऊरश और अभिसार देश थे। नैऋति दिशा में पूर (पौरव) जाति रहा करती थी। ये वैदिक काल में ही प्रसिद्ध थे। ग्रीक इतिहासकारों ने लिखा है कि झेलम, चीनाब नदी के बीच का राज्य बड़े "पोरस" के, चिनाब और रावी के बीच का राज्य छोटे "पोरस" के शासन में थे। रावी और चिनाब के दक्षिण भागों में शिविल, मालव, क्षुद्रक, अम्बष्ठ जातियों रहा करती थीं। ये सब स्वतन्त्र जातियाँ थीं। इनमें कुछ प्रजातन्त्र भी थीं। पर इनके पारस्परिक प्रतिस्पर्धा के कारण ही विदेशियों को भारत पर आक्रमण करने का अवसर मिला।

यूरोप के आग्नेय दिशा में मसेडन नाम का सम्पन्न यवन राज्य हुआ करता था। ३३६ ई. पू. में अलेग्जेन्डर नाम का एक

५. अलेग्जेन्डर का आक्रमण

शक्तिशाली युवक इस देश का राजा हुआ। इसने डेरियस के वंशज फारस के राजाओं को ३३३ ई. पू. और ३३१ ई. पू. दो बार हराया और उनके राज्यों को हड़प लिया। ३३० ई. पू. फारस का साम्राज्य अलेग्जेन्डर के आधीन हो गया था। भारत के उन भागों को, जो फारस के आधीन थे, अपने वश में करने के लिए वह हिन्दूकुश पार करके आया। उसने पुष्कलावती आदि नगरों को पराजित किया। ३२६ ई. पू. नावों के पुल पर से सिन्धु नदी पार करके भारत में प्रवेश किया। तक्षशिला के राजा अम्भि ने अलेग्जेन्डर को आतिथ्य दिया, उसकी उसने सहायता भी की।

अम्भि का यह व्यवहार बड़े पौरव राजा (पोरस) को बहुत बुरा लगा। अलेग्जेन्डर जब वितस्ता (झेलं) नदी के पास आया, तो इस तरफ पौरव की बड़ी सेना युद्ध के लिए सन्नद्ध खड़ी थी। नदी में बाढ़ आयी हुई थी और सामने बड़ी सेना खड़ी हुई थी। यह देख कि नदी पार करना असम्भव था, अलेग्जेन्डर ने एक उपाय सोचा। उसने इस तरह दिखाया,

जैसे उसकी सेना तितर बितर हो गई हो। पर १६ मील नीचे उसने नदी पार की। फिर उसने पौरव सेना से युद्ध किया।

पौरव सेना में ३०,००० पदाति थे। ४,००० घुड़सवार, ३०० रथिक, २०० हाथी पर सवार योद्धा थे। यदि पौरव राजा, अलेग्जेन्डर के हमला करने से पहिले हमला करता तो शायद पराजित न होता। अलेग्जेन्डर के पास अधिक घुड़सवार थे। उनके हमले का रथिक मुकाबला न कर सके। कीचड़ में पदाति घूम फिर न सके।

हाथी पीछे मुड़कर अपनी सेना पर ही आक्रमण करने लगे। यद्यपि उसकी सेना नष्ट कर दी गई थी, तो भी पौरव राजा हाथी पर सवार हो तब तक युद्ध करता रहा, जब तक वह बुरी तरह घायल न हो गया। जब उसको पकड़कर अलेग्जेन्डर के सामने ले जाया गया, तो अलेग्जेन्डर ने पूछा—"तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार किया जाय?" तब राजा ने कहा—"उसी तरह, जिस तरह राजा के साथ किया जाता है।" अलेग्जेन्डर ने उसके राज्य को वापिस सौंप दिया। अलेग्जेन्डर ने गंगा के तट तक विजय यात्रा करनी चाही थी। परन्तु उसकी सेना युद्ध से ऊब चुकी थी। उन्होंने आगे जाने से इनकार कर दिया। अलेग्जेन्डर ने कुछ सेना वापिस भेज दी। और कुछ सेना के साथ, रावी और चिनाब के दक्षिण में निवास करनेवाली जातियों को नाश करता पीछे बढ़ता गया। जब वह माल्वों से युद्ध कर रहा था, तब बुरी तरह घायल हुआ। फिर उसने सिन्ध के मुख्य नगरों पर आक्रमण करके उनको जीता। ३२५ ई. पू. में वह समुद्र मार्ग से बेबिलोन पहुँचा और दो वर्ष बाद मर गया।

जिस प्रदेश को अलेग्जेन्डर ने जीता था उसमें राजप्रतिनिधि के पद पर फारस और मासिड़न के निवासी ही नियुक्त किये गये। शशिगुप्त और अम्भी आदि राजाओं ने भी यवन शासन की मदद की। पौरव राजा और अभिसार देश के राजा सामन्त बनाये गये। पुष्कलावती और तक्षशिला में अलेग्जेन्डर की सेना के केन्द्र बने। व्यापार की अभिवृद्धि के लिए अलेग्जेन्डर ने पंजाब में, जहाँ उसका शासन था, बहुत से नगर बनवाये।

पार्वती परिणय

द्वितीय अध्याय

दक्ष यज्ञ में हुई सती दग्ध जब से
बने योगी व तपस्वी शिव तब से
पहुँचे हिमालय वृंद समेत सोच यह
रम्य स्थल है जप करने यह

जान परमशिव पधारे हिमगिरि
हुए हिमवंत प्रमुदित, उल्लसित अति
आयी उन्हें याद भविष्यवाणी नारद की
हुए मुदित यों होते पूर्ण इच्छा मन की

लिये पार्वती को, पत्नी को
लिये आप्तबंधु, परिचारकों को
चले हिमवंत मग्न हो आनंद में
पाने शिव का दर्शन-लाभ

किया सब ने नमस्कार विनयपूर्वक
दिया आशीश शिव ने धर हाथ सिर पर
फिर दी आज्ञा शिव ने हिमवंत को
लौट चलें अब आप अपने गेह को

निराश न हो बोले हिमवंत यों
'हे भगवान्' गाते हैं मुनिवर
सब तुम्हारी अद्भुत गाथा
पर हुए नहीं दर्शन तुम्हारे उन्हें भी

मैं हूँ बड़भागी, अति भाग्यवान
मिले मुझे दर्शन तुम्हारे
फिर लौटूँ कैसे खाली हाथ
धन पाकर बनूं क्यों निर्धन

यह कन्या है मेरी सुपुत्री
छुटपन से ही हो तुम बसे
मन में इसके, जपती है तुझे
रत रहती पूजा में तुम्हारी

मुदित हैं हम पाकर तुमको यहाँ
पधारे तुम ही अनायास यहाँ
करो स्वीकार इस कन्या को
रहेगी परिचर्या तुम्हारी करने को,

पर रह गये शिव मौन
कहा तक नहीं 'हाँ' या 'ना'
लख मौन शिव को, सोचा
अद्रिराज ने मिली स्वीकृति मुझे

चले हिमवंत पुत्री से कह यह
'करो सेवा शिव की तन-मन से
हो तुम पुण्यवती, मिला मौका यह
जानो यह है परीक्षा तुम्हारी'

सुन यह गड़ गयी पार्वती लज्जा से
देखा शिव को शर्मीली आँखों से
फिर लग गयी कार्य में मन से
मग्न रहती कार्य में तन-मन से

मोर-पंख था उसका झाड़ू
दर्पण-सी रखती भूमि को शुद्ध
छिड़कती पानी मिला सुगंध-द्रव्य में
फैलती सुगन्धी भरती दिशाएँ

सजाती आँगन मोतियों से
दीखता वह दृश्य अति मनोहर
घड़े भर-भर लाती गंगाजल
मन हर लेती चाल उसकी मस्तानी

नाना फल-फूलों को रखती सम्मुख
करती प्रणाम छू चरणों को
सुन्दरी पार्वती का श्रम हरता चंद
वह जो शोभता शिव के सिर पर

बसव खोद रहा खुरों से
बरफ वह जो जम गया था
देख वहाँ जीव-जंतु अनेक
रंभाता, चिल्लाता, मचलता

शिव थे आसीन सम्मुख अग्नि के
लीन थे जप में आत्मा ही में
बैठी पार्वती निकट ही शिव के
रहती निहारती मुखारविंद उनके

तारक था राक्षस एक भयंकर
पीड़ित थे प्राणी उसके अत्याचारों से
काँप उठते सब सुन नाम उसका
था कोई नहीं जो कर सके दमन उसका

हराया उसने इंद्रराज को भी युद्ध में
पकड़ लाया श्वेत घोड़ा उनका
लगा भोगने निरातंक स्वयं
इंद्र की सुख-संपत्ति का

यम के साँड को भिड़ाता
अमरपति के ऐरावत से
झलते पंखे देवता उसे
यों बन गया स्वयं अमरपति

सेवक तारक के थे स्वेच्छाचारी
विचरते स्वच्छंद अपूर्व देवलोक में
प्राप्त थीं सेवाएँ उन्हें सभी
मुनिवर, यक्ष व अप्सराओं की

इंद्र पड़ गये शिथिल, जाना
जीतना असंभव तारक को
पहुँचे ब्रह्मलोक लिये बंधुओं को
जताने ब्रह्म से अत्याचार तारक के

अमरगण थे अति भयभीत
लगा देख ब्रह्म को उन्हें यों
पा सूर्य-किरणों के जाल को
मिली मुक्ति ज्यों सुप्त कमलों को

भीत इंद्र ने की प्रशंसा
ब्रह्म की मुक्तकंठ से
फिर बोले ब्रह्मदेव यों
आये क्यों औ किस काम से

सुरपति बोले यों दीन-स्वर में
'हे देव, कहूँ क्या मैं आप से
आप हैं अन्तर्यामी, सर्वव्यापी
बात कौन-सी ऐसी छिपी आप से

राक्षस तारक के अत्याचारों से
पीड़ित हैं हम सब देवगण
आपके वरदानों से बन दंभी
तुला हुआ है करने लोक-नाश

भगा दिया है उसने अमरों को
मुग्ध है वह अप्सराओं पर
मिटा दिया उसने पुण्य-पुरुषों को
डाला किन्नरों को मृत्यु के मुँह में

विद्याधर, गंधर्व
विश्वदेवता सब
बने सेवक तारक के
बना वह शासक सब का

मुनियों की खैर नहीं इस अधम से
बच नहीं पाते वे उसकी आँखों से
ऐसा नहीं एक भी यज्ञ, जिसका
न हो नाश उसके हाथों से

भरता है दंभ वह दंभी यों
भागे शिव वनों में मुझ से डर
न थे, न हैं विष्णु कभी
हूँ उन्नत, उत्तम सब से मैं

दीजिए हमें सेनापति वह
जीत सके जो इस क्रूर को'
सुन यह पड़ गये ब्रह्म सोच में
करूँ क्या, बचाऊँ कैसे इनको

'हे अमरगण, होगी पूर्ण
अभिलाषा आपकी अवश्य
अच्छा न होगा अंत
तारक का हाथों में मेरे

शिव हैं लीन अब
तपस्या में हिमगिरि पर
पार्वती है उन्हीं के निकट
कर रही परिचर्या दिन-रात

शक्ति है तारक को मारने की
शिव-पार्वती की संतान ही को,
लगाकर शक्ति करो प्रयत्न ऐसा
बने पार्वती अर्धांगिनी शिव की'

दे सलाह यों इंद्र को
हुए परमब्रह्म अंतर्धान
इंद्रादि लौटे अमरलोक
उल्लास व मोद में पगे

[८]

[कालभैरव की मूर्ति के सामने मांद्रदन्डी ने जो हवन किया था, उसका धुँआ सारी गुफ़ा में छा गया। इस प्रकार उसकी रहने की जगह के बारे में, राजा द्वारा भेजे गये सैनिकों को मालूम हो गया। राजगुरु ने, जो मन्त्रशास्त्र जानता था स्वयं आकर कालभैरव का मुख बन्द कर दिया। मान्त्रिक ने केशव और जयमल्ल को कहीं भाग जाने के लिए कहा।]

ब्रह्मापुर के सैनिकों में से एक ने, जो पहाड़ पर चढ़ रहे थे केशव और जयमल्ल को गुफ़ा से बाहर आते हुए देखा।

उसने राजगुरु से कहा—"गुफ़ा में एक नहीं है। दो मान्त्रिक हैं, देखिये तो।" उसने गुफ़ा की ओर हाथ दिखाया।

सैनिकों के इस प्रकार कहते ही। राजगुरु के साथ केशव के बूढ़े पिता ने भी उस तरफ़ देखा। उसकी जान में जान आई। उसका लड़का जीवित था। जैसा उसको भय था, वैसा कुछ न हुआ था। मान्त्रिक ने उसका कुछ न बिगाड़ा था। गनीमत थी।

राजगुरु ने भागते हुए केशव और जयमल्ल को देखते ही कहा—"वह मान्त्रिक नहीं है, उसके शिष्य होंगे। मान्त्रिक अब तक गुफ़ा से, किसी और

रास्ते चला गया होगा। नहीं तो यहीं कोई ऐसा गुप्त स्थल होगा जहाँ वह छुप गया होगा। हमें उसके शिष्यों को भी पकड़ना होगा। तुम चारों ओर से उन्हें घेर लो।" उसने सैनिकों को आज्ञा दी।

वे सैनिक, जो तब तक एक झुन्ड में जा रहे थे कई टुकड़ियों में बँट गये। घेरा-सा बनाकर पहाड़ पर चढ़ने लगे।

केशव और जयमल उनको देखकर स्तब्ध से खड़े रहे। वे न सोच सके कि किधर भागा जाये।

"सैनिक हमें चारों ओर से घेरने की कोशिश कर रहे हैं। उनकी नजर बचाकर कैसे भागा जाये!" केशव ने पूछा।

"मैं भी यही सोच रहा हूँ।" जयमल यह कहकर एक क्षण रुका। हम एक काम करें। जब तक ये सैनिक हमारा पीछा करते रहेंगे तब तक हम जंगल में न जा सकेंगे। इसलिए हम यहीं कहीं किसी गुफ़ा में छुप जायें।"

"जो हमें पकड़ने निकले हैं, क्या वे हमारे लिए गुफ़ायें, गढ़े वगैरह नहीं छान डालेंगे! कुछ भी हो, गुफ़ा में से निकलते ही उन लोगों ने हमें देख लिया तभी से हम उलझन में पड़ गये।" केशव ने कहा।

"केशव, तुम न घबराओ। हम ऐसी कोशिश करेंगे कि इन सैनिकों के हाथ आयेंगे ही नहीं। यदि हम पकड़े भी गये, तो मैंने एक तरीका सोच ही रखा है। जिससे हम अपने प्राण बचा सकेंगे।" जयमल ने कहा।

केशव ने सोचा कि जयमल ने पहिले ही कोई चाल सोच रखी थी। केशव

जानना ही चाहता था कि वह क्या चाल थी कि जयमल्ल पासवाली एक गुफ़ा में कूदा। "केशव। यहाँ अन्धेरे से मत डरो। मेरे पीछे आओ। मैं गुफ़ा का रास्ता अच्छी तरह जानता हूँ। बेफ़िक्र चले आओ।"

केशव और कुछ कर भी न सकता था। जयमल्ल के पीछे केशव भी गुफ़ा में घुसा। अन्दर अन्धेरा था। जयमल्ल दोनों हाथ फैलाकर गुफ़ा की दीवारें छूता आगे बढ़ा। उसने केशव से सावधानी से आने के लिए कहा।

राजगुरु की आज्ञा पर जो मान्त्रिक की गुफ़ा और आस पास के प्रदेश को घेरने निकले थे, उन सैनिकों ने जयमल्ल और केशव को नहीं देखा।

उनमें से चार हर गुफ़ा में झुककर झाँकते झाँकते आखिर भ्रष्टदण्डी मान्त्रिककी गुफ़ा के पास आये। पर ज्यों ही उन्होंने गुफ़ा के अन्दर कालभैरव की मूर्ति देखी तो वे इतने डरे कि वे मूर्छित होते होते बचे।

"भयंकर आकृति है। रौद्र रूप है। हमारे पैरों के नीचे की जमीन खिसक रही है।" कहकर दो सैनिक गुफ़ा के सामने दण्डवत करके गिर गये। सैनिकों का चिल्लाना सुन राजगुरु और सेनापति वहाँ भागकर गये। गुफ़ा के सामने दोनों सैनिक मूर्छित पड़े थे।

और दो सैनिक गुफ़ा से सटे सटे खड़े कोई स्तोत्र गुन गुना रहे थे। सैनिकों की हालत देखकर सेनापति गरमा उठा। उसने नीचे पड़े सैनिकों को लात मारी। "अरे, तुम मर गये हो, या जिन्दे हो?" उसने दान्त पीसे। वह गुस्से में इधर उधर चहल कदमी करने लगा।

सेनापति के लात मारते ही दोनों सैनिक, जो नीचे गिरे हुए थे यकायक उठ खड़े हुए। और जो स्तोत्र जप रहे थे उन्होंने आँखें खोलीं। फिर चारों सैनिकों ने एक स्वर में कहा—"गुफ़ा में उस भयंकर मूर्ति को देखते ही हमारे शरीर स्वाधीन नहीं रहे, सेनापति।"

"अरे हम त्रम्रापुर के सैनिक हैं।" कहते हुए राजगुरु ने गुफ़ा में प्रवेश किया।

गुफ़ा में सर्वत्र नीरवता थी। कालभैरव की मूर्ति के सामने मान्त्रिक ने जो अग्नि जलाई थी वह अभी जल रही थी। उसका धुंआ अभी गुफ़ा में इधर उधर बह रहा था। भयंकर वातावरण था।

चारों तरफ़ देखते हुए राजगुरु चिल्लाया "सेनापति"

सेनापति अन्दर गया। उसके पीछे उसके सैनिक घबराते घबराते घुसे।

"इस गुफ़ा में से कहीं अवश्य कोई गुप्त मार्ग जाता होगा। मुझे सन्देह है कि वह उस रास्ते चला गया होगा। उसके दोनों शिष्यों को गुफ़ा में से भागते हुए हमने देखा ही था। उन्हें राजा का अंगरक्षक ढूँढ़कर पकड़ ही लेगा। हमें इस मान्त्रिक को पकड़ना होगा।" राजगुरु ने कहा।

सेनापति ने चारों ओर गौर से देखा। उसे कहीं कोई दरवाजा नहीं दिखाई दिया। "गुफ़ा में हम जिस रास्ते आये हैं, सिवाय उस रास्ते के और कोई रास्ता नहीं दिखाई दे रहा है, राजगुरु!" उसने कहा।

"जो रास्ता यों ही दीख जाये वह कैसे गुप्त मार्ग होगा! गुफ़ा में हर जगह दबाकर देखो अगर कोई गुप्त द्वार होगा, तो वह खुल जायेगा।" राजगुरु ने कुछ सोचते हुए कहा।

सैनिकोंने सारी जगह ठोककर देखी। कहीं कोई गुप्त मार्ग नहीं दिखाई दिया।

इस बीच राजगुरु कालभैरव मूर्ति को ध्यान से देखने लगा। यकायक उसे सन्देह हुआ। सेनापति ने जब आकर बताया कि कहीं कोई गुप्त मार्ग न था तो राजगुरु ने उसे कालभैरव की मूर्ति दिखाते हुए कहा—शायद उस मूर्ति के नीचे कोई गुप्त मार्ग होगा। नहीं तो मान्त्रिक कहाँ गया होगा! मूर्ति को हिलाकर देखो।"

सैनिक और सेनापति ने कालभैरव की मूर्ति को ऊपर उठाने का प्रयत्न किया। पर मूर्ति हिली नहीं। उन्होंने इधर उधर खींचने की कोशिश की। पर मूर्ति तब भी न हिली।

राजगुरु ने इस बार मूर्ति के सिर से नीचे टटोलना शुरु किया। उसने उसकी पीठ पर ठोककर देखा। "ओह तो यह है यह रहस्य, मैं सोच रहा था कि यह कोई जली हुई मूर्ति है। नहीं तो यह यूँ ही जुड़ी जुड़ाई मूर्ति है। यदि किसी भाग को हिलाया गया, तो अवश्य इसके दो टुकड़े हो जायेंगे। मुझे सन्देह हो रहा है कि मान्त्रिक इसके पेट में कहीं छुपा

हुआ होगा। यह भी सम्भव है कि वह हमारी बातचीत भी सुन रहा हो" कहता कहता वह जोर से हंसा।

राजगुरु के यह कहते ही सैनिक और सेनापति, मूर्ति के सिर और पैर खींचने लगे। सैनिक अब भी उस मूर्ति को देखकर डर रहे थे। वे ऐसे इधर उधर देख रहे थे जैसे तपते लोहे को छू रहे हों।

राजगुरु यह सब देख रहा था। उसने क्रुद्ध होते हुए उनकी ओर देखा। "क्यों इतने डर रहे हो; तुम्हारे प्राणों का कुछ न होगा।"

सैनिकों का भय, राजगुरु का कहना सुनकर, गया हो न गया हो, पर वे डरने लगे कि कहीं ऐसा न हो कि उनकी नौकरी ही चली जाये।

राजगुरु हर तरह से समर्थ था। राजा उसकी बात सुनता था। यह सोच, सैनिक जी जान से कालभैरव की मूर्ति को इधर उधर खींचने लगे। जब उनमें से एक ने मूर्ति की पूँछ पकड़कर ऊपर नीचे खींची, बिजली की तरह मूर्ति दो भागों में टूटकर नीचे गिर गई।

राजगुरु के आश्चर्य की सीमा न थी। सैनिकों की बात तो कहने की आवश्यकता की नहीं। मान्त्रिक ने कालभैरव के पेट में से किसी गुप्त मार्ग की व्यवस्था की होगी। अब वह उस मार्ग से भाग गया होगा। या उसी में कहीं छुपा बैठा होगा।

राजगुरु ने यह सोचकर, सेनापति से कहा—"सेनापति, मान्त्रिक को पकड़ने की बात, अब लगता है, कुछ आसान हो गयी है। जब हमारे सैनिक पहाड़ की गुफ़ायें छान रहे हैं तो वह पहाड़ उतर कर आने का प्रयत्न नहीं करेगा। अब यह मार्ग तुमने देख लिया है, न मालूम यह कहाँ जाता है। मान्त्रिक इसी में कहीं छुपा हुआ होगा। हमारे सैनिकों को मशालें देकर सब जगह देखने के लिए कहो।"

गुफ़ा में मान्त्रिक ने अपने उपयोग के लिए कुछ मशालें रख रखी थीं। उन मशालों को सैनिकों ने वहीं रखे तेल में डुबाया, जलाया। सेनापति रास्ता दिखा रहा था। वे कालभैरव के पेट में से मार्ग में उतर पड़े।

दागोंवाले शेर की गुफ़ा में छुपे हुए केशव और जयमल्ल ने कालभैरव की मूर्ति के दो टुकड़े होने की ध्वनि सुनी। शेर गुफ़ा के सामने के पत्थर पर आराम से पड़ा सो रहा था।

"ब्रह्मदन्डी का रहस्य सैनिकों को मालूम हो गया है। अब वे उसे बाहर खींचकर रहेंगे।" जयमल्ल ने कहा। इतने में, जिस गुफ़ा में वे छुपे हुए थे उसके पीछे किसी का आहट सुनाई दिया।

"सैनिकों को हमारे छुपने की जगह मालूम हो गई है।" केशव ने कहा।

जयमल्ल एक छलांग में गुफ़ा के पीछे गया। और वहाँ एक पत्थर पर लोहे का एक गर्डर रखा। फिर धीमे धीमे कदम रखता केशव के पास आया। उसके कान में उसने कहा। "अब हमें उस तरफ़ से कोई खतरा नहीं है। वे इतना ही जान सकेंगे कि वहाँ एक पत्थर तो है। पर वह पत्थर, गुफ़ा का द्वार है वे न जान सकेंगे। मगर ब्रह्मदन्डी का क्या हुआ? क्या वह इनको मिल गया है?" उसने सन्देह करते हुए पूछा।

केशव कोई जवाब देनेवाला था कि पीछे से किसी का चिल्लाना सुनाई दिया "शिष्य."

शिष्य आवाज पहिचानते ही जयमल्ल काँपने लगा। उसने केशव के कान में कहा—"कालभैरव के पेट में से एक गुप्त मार्ग है। यह तो मैं जानता था, पर वह यहाँ पहुँचता था, यह मैं न जानता था। जब उसे मालूम हो गया होगा कि उसका रहस्य सैनिक जान गये हैं, तो वह यहाँ भागकर आ रहा होगा। यदि हमने उस पत्थर को हटाया, तो हम भी सैनिकों

द्वारा पकड़ लिए जायेंगे। इसलिए हमारा चुपचाप रहना ही अच्छा है।"

इस बीच त्रामदन्डी मान्त्रिक कई बार "शिष्य, शिष्य" चिल्लाया, फिर वह गुफ़ा के पिछले हिस्से को मन्त्रदन्ड से पीटने लगा। पर उसे कहीं से भी कोई जवाब न मिला। केशव और जयमल्ल गुफ़ा के कोने में चुपचाप बैठे थे।

और इधर राजगुरु की आज्ञा पर जो सेनापति और सैनिक गुप्त मार्ग में गये थे वे मान्त्रिक का रास्ता न जान सके।

वे इधर उधर बहुत देर तक घूमते रहे। अन्धेरे में वे बहुत भटके। फिर थोड़ी देर बाद वे राजगुरु के पास वापिस आ गये।

"क्या मान्त्रिक नहीं मिला!" राजगुरु ने पूछा।

"गुरु, उसका इस मार्ग में पता न लगा। रास्ता कहीं भी सीधा नहीं है। अंगुलियों की तरह हर तरफ़ रास्ते जा रहे हैं। वह कहीं न दिखाई दिया" सेनापति ने कहा।

"तो यह बात है!" राजगुरु कुछ देर तक सोचता कहा।—"इसमें सन्देह नहीं है कि वह गुफ़ा में कहीं छुपा हुआ है। उसको बाहर निकालने का एक ही मार्ग है। सब जाकर सूखी लकड़ियाँ इकट्ठी कर लाओ। रास्ते में उन्हें डाल दो और आग जला दो। वह धुंआ न सह सकेगा। और किसी न किसी रास्ते बाहर निकलेगा। तब उसे पकड़ सकते हैं।"

तुरत सैनिकों ने मार्ग के द्वार पर बहुत-सी लकड़ियाँ जमा कर दीं। उस पर तेल छिड़ककर आग लगा दी। (अभी है)

पशु वंचन

विक्रमार्क ने अपना हठ न छोड़ा। वह पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव उतारकर, कन्धे पर डाल, हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चल पड़ा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा, कहीं यह आपत्ति तुम पर स्त्री के कारण तो नहीं आयी है? क्योंकि आदमी चाहे कितना ही चतुर और बुद्धिमान हो, कभी-कभी स्त्री के कारण आफ़त में पड़ जाते हैं। इसका रूपबाण ही उदाहरण है। कहीं तुम्हें थकान न मालूम हो, मैं उसकी कहानी सुनाता हूँ। सुनो।" उसने यों कहानी सुनानी शुरु की।

कपिल देश के राजा के एक लड़की थी, जिसका नाम मल्लिका था। उसके सयाने होते ही अनेक देश के राजाओं ने उसके विवाह के लिए अपने दूत भेजे।

बेताल कथाएँ

पर कपिल देश का राजा, अपनी लड़की की अनुमति के बगैर शादी नहीं करना चाहता था। इसलिए वह जब कभी कोई दूत आता, तो अपनी लड़की से पूछता—"क्या यह सम्बन्ध तुम्हें पसन्द है?" मल्लिका सब सम्बन्धों को मना करती रही।

इस बीच पद्म देश के राजा वीरसिंह की बड़ी रानी मर गई। उसने अपने मन्त्रियों को बुलाकर कहा—"मैं फिर विवाह करना चाहता हूँ। पता लगाइये कहाँ मेरे योग्य कन्या है।" मन्त्रियों ने बिना हिचक के कपिल राजा की लड़की मल्लिका का नाम बताया। वीरसिंह ने अपने दूतों को कपिल देश के राजा के पास भेजा।

कपिल राजा को ज्यों ही मालूम हुआ कि वीरसिंह ने उसके पास दूत भेजे हैं, तो उसने उस दिन का दरबार खतम कर दिया और दूतों को गौरव के साथ अपने महल में ले गया।

यह जानकर कि वीरसिंह उसकी लड़की से विवाह करना चाहता था, कपिल देश का राजा खुश हुआ और दुःखी भी। वीरसिंह बड़ा बलवान था। यदि वह चाहता, तो क्षण-भर में कपिल राज्य को जीत सकता था। उन दोनों देशों में अच्छे सम्बन्ध थे। विवाह के कारण वे सम्बन्ध और दृढ़ हो सकते थे, यह सोच कपिल देश का राजा खुश हुआ और दुःखी इसलिए था कि इससे पहिले मल्लिका ने अनेक राजाओं को इनकार कर दिया था। राजा वीरसिंह से वह विवाह करने के लिए मानेगी कि नहीं।

उसने अपने लड़की के पास जाकर कहा—"बेटी, पद्म देश के महाराजा वीरसिंह ने तुम से विवाह करने के लिए दूतों द्वारा खबर भेजी है। तुम्हारी राय क्या है?"

मल्लिका जानती थी कि उसके पिता में वीरसिंह के प्रस्ताव के ठुकराने का साहस न था। इसलिए उसने कहा—"जो आपके लिये दामाद हो सकता है, क्या मेरे लिए पति नहीं हो सकता?" कपिल देश के राजा ने समझा कि उसकी लड़की विवाह के लिए अनुमति दे रही थी, उसने दूतों से कहा—"दो सप्ताह बाद अच्छा मुहूर्त है। वीरसिंह महाराजा, उस दिन यहाँ आ सकते हैं।"

मुहूर्त से एक दिन पहिले वीरसिंह अपने लड़कों और अंगरक्षक योद्धाओं और सेना के साथ नगर में आया। उसके अंगरक्षक बड़े पराक्रमी थे। उनमें रुपबाण नाम का व्यक्ति बड़ा सुन्दर था।

कपिल देश के राजा ने वीरसिंह के सम्मान में बड़ी दावत दी। उस दावत में वीरसिंह के साथ उसके अंगरक्षक, लड़के और मुख्य कर्मचारी उपस्थित हुए और एक पंक्ति में बैठे।

मल्लिका एक खिड़की में से वीरसिंह के परिवार को देख रही थी—उसने अपनी सहेली से पूछा—"यह दावत क्यों हो रही है! ये राजा हमारे देश में क्यों आये हैं?"

"यदि आपको नहीं मालूम है, तो क्या मुझे होगा!" दासी ने कहा। पर जब राजकुमारी ने फिर वही प्रश्न किया, तो दासी ने कहा—"ये महाराज आप से विवाह करने के लिए आये हैं।"

"विवाह की बात सुनी तो थी, पर यह न मालूम था कि ये ही मुझसे विवाह करने जा रहे हैं। ये मेरे पिता से भी बड़े हैं। अच्छा होता यदि उनके लड़के या पोते विवाह करते, पर ये स्वयं क्यों विवाह कर रहे हैं?" मल्लिका ने उपहास करते हुए कहा।

उसने उस दिन रात को वीरसिंह के पास जो पेय भिजवाये, तो उसमें बेहोशी की दवा मिला दी और यह भी व्यवस्था कर दी कि सिवाय अंगरक्षकों के वह पेय सबको दिया जाये! वे पेय पीकर वीरसिंह, उसके मन्त्री बेहोश हो गिर गये। फिर एक दासी ने रूपवाण के पास आकर कहा—"आपको राजकुमारी बुला रही हैं।"

रूपवाण दासी के साथ राजकुमारी के महल में आया। "क्या आज्ञा है?" उसने पूछा।

"कल मुझ पर एक बड़ी आपत्ति आनेवाली है। तुम्हारा राजा मुझसे विवाह करलेगा। मुझे यह विवाह पसन्द नहीं है। इस आपत्ति से तुम्हें ही बचाना होगा। सुना है कि तुम बहुत बलवान और बहादुर हो। यदि तुमने मेरी रक्षा की, तो मैं इच्छापूर्वक तुम्हारी पत्नी हो जाऊँगी।" मल्लिका ने कहा।

"मैंने महाराज का नमक खाया है। मैं कैसे तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ?" रूपवाण ने कहा।

"क्या तुम नहीं जानते कि आपत्ति में स्त्री की सहायता करना कर्तव्य है? मैं यह

नहीं कहती कि तुम राजद्रोह करो। मैं चाहती हूँ कि तुम मेरी मदद करो।" मल्लिका ने कहा।

"पर इसके लिए मुझे क्या करना होगा?" रूपबाण ने पूछा।

"तो आज रात ही हमें यहाँ से भाग निकलना होगा।" मल्लिका ने कहा।

"यदि मैंने यह काम किया, तो मैं अपने महाराजा का बड़ा शत्रु हो जाऊँगा। यही नहीं, इससे आपका क्या लाभ होगा! क्योंकि मैं वीरसिंह महाराजा की शक्ति जानता हूँ। चाहे हम कहीं भी जायें, वे हमारा पीछा करेंगे। हमें बुरी तरह सज़ा दे सकते हैं। यह सम्भव है कि तुम उनकी पत्नी न बनो, पर मेरी पत्नी बनना असम्भव है।" रूपबाण ने साफ़-साफ़ कहा।

"तुम मेरी सहायता नहीं करना चाहते और अपनी जान बचाने के लिए ही यूँ बातें बना रहे हो।" मल्लिका ने कहा।

"मैंने इसलिए कहा था ताकि तुम सच जान सको। चलो चलें। मैं चलने के लिए तैयार हूँ।" रूपबाण ने कहा

मल्लिका बड़ी खुश हुई और उसके साथ निकल पड़ी।

मिला हुआ था कि वह किसी के हाथ मारा नहीं जायेगा। उसकी गदा ही उसके प्राण ले सकती थी और वह उस गदा को सोते समय भी अपने पास रखता। यदि किसी को उस गदा की चोट लगती, चाहे वह कितना ही बलवान हो, मर कर रहता। इसलिए उस राक्षस के वन में कोई न आया करता। महाबलवान वीरसिंह भी यदि उस तरफ़ शिकार के लिए आया करता, तो उस वन के पास न आता।

रूपबाण की बातों में अतिशयोक्ति बिल्कुल न थी। अगले दिन सवेरे वीरसिंह यह जानकर कि रूपबाण और मल्लिका भाग निकले थे, बड़ा क्रुद्ध हुआ। वह अपनी सेना के साथ उन्हें पकड़ने के लिए निकल पड़ा। इसलिए रूपबाण और मल्लिका, जहाँ खाना बनाते, वहाँ विश्राम न करते, रात में बहुत-सी गुप्त जगहों पर सोकर चलते गये।

उनकी स्थिति उन जन्तुओं की तरह थी जिनका शिकारी पीछा कर रहे हों। चलते चलते वे एक ऐसे वन में पहुँचे जहाँ एक राक्षस रहा करता था। उस राक्षस को वर

इसलिए रूपबाण के लिए यह वन सुरक्षित था। वह मल्लिका को लेकर राक्षस के पास गया। उसकी शरण माँगी। उससे प्रार्थना की कि उन्हें उस वन में एक पर्णशाला बनाकर रहने दे।

राक्षस इसके लिए मान गया। पर उसने एक नियम बनाया। राक्षस के वन में एक महिमावाला जामून का पेड़ था। कहा जाता था कि जो कोई उसके फल खायेगा, उसे न भूख लगती, न प्यास ही। यही नहीं, उसे बुढ़ापा भी न आता। उस महिमावाले पेड़ में कई अपूर्व शक्तियाँ थीं। राक्षस ने नियम बनाया कि जब तक रूपबाण उस

जंगल में हो, उस जामून के पेड़ पास न जाये, उसके फल छूये तक न।

"मैं जामून के पेड़ की ओर देखूँगा तक नहीं। मुझे और मेरी पत्नी को केवल इस वन में जीने दो।" रूपवाण ने कहा। राक्षस की अनुमति पर उसने एक पर्णशाला बनायी। उसमें उसने और मल्लिका ने अपने रहने की व्यवस्था की। जिस किसी चीज़ की उन्हें ज़रूरत थी, वह उन्हें जंगल में मिल ही जाती। इसलिए उन्हें जंगल से बाहर जाने की ज़रूरत ही न थी। राक्षस भी उनके पास न आया करता। जामून के पेड़ के पास ही वह अपने घर में रहा करता।

बीरसिंह जब अपनी सेना के साथ राक्षस के वन के पास आया, तो उसने सोचा कि वह तब कुछ न कर सकता था। वन से कुछ दूरी पर उसने डेरे लगवाये। फिर अपने अंगरक्षक सैनिकों को अपने चारों ओर बिठाकर उसने कहा—"मैं, तुम में से किसी को भी राक्षस वन में जाने की आज्ञा न दूँगा। परन्तु यदि कोई साहस करके राक्षस वन में गया और रूपवाण का सिर काटकर लाया, मुट्ठी-भर महिमावाले जामून के पेड़ के फल लाया, तो उसे ईनाम में बड़ी-सी जागीर दूँगा।"

यह सुनते ही दो सैनिक उठ खड़े हुए। वे जामून के पेड़ के पास न जाना चाहते थे, यदि वे जाते तो राक्षस के हाथ वे अवश्य मारे जाते। यदि वन में गये, तो सम्भव था कि राक्षस उन्हें न मारे। रूपवाण पहिले ही वन में जा चुका है। इसलिए इन योद्धाओं ने सोचा कि वे रूपवाण का सिर काटकर ला सकेंगे।

परन्तु उनकी आशा पूरी न हुई। रूपवाण ने दोनों को मल्ल-युद्ध में पराजित

कर दिया और उन दोनों को कैद कर लिया। उन दोनों ने रूपवाण की क्षमा माँगते हुए कहा—"हमने तुम्हारा सिर या जामून के फल लाकर दिये, तो राजा ने वचन दिया था कि वे हमें जागीर देंगे। हम उस लालच में ही यहाँ आये थे।"

मल्लिका ने, जो यह बातचीत सुन रही थी, पूछा—"यह महिमावाले जामून की क्या बात है?"

राक्षस के घर के पास के पेड़ के और उसके फल के बारे में, जो और लोग कहा करते थे, रूपवाण ने वह मल्लिका से भी कहा—"मुझे वे फल चाहिए।"

"राक्षस मुझे मार देगा।" रूपवाण ने कहा।

"क्यों मारेगा? यदि तुमने राक्षस से वे माँगे तो तुम्हें ज़रूर देगा। हमें उसने अपने वन में रहने भी तो दिया है। जब तक तुम वे फल न लाकर दोगे तब तक मैं अन्न नहीं खाऊँगी।" मल्लिका ने हठ किया।

रूपवाण भी क्या करता? वह राक्षस के पास गया।

"क्यों, क्या बात है!" राक्षस ने पूछा।

"मुझे मेरी पत्नी बहुत तंग कर रही है। मुझे मुट्ठी भर जामून तोड़ने दो।" रूपवाण ने कहा।

यह सुनते ही राक्षस उबल पड़ा। "दुष्ट कहीं का, मरो।" गदा उठाकर वह रूपवाण की ओर लपका और ज़ोर से रूपवाण पर उसे मारा।

पर रूपवाण फुर्ती से एक तरफ़ हट गया और गदा भूमि में आ धंसी। रूपवाण ने ज़ोर से उसके हाथ पर लात मारी। गदा अपने हाथ में ले ली और जब उस गदा से राक्षस पर प्रहार किया, तो वह मर गया। रूपवाण जामून के पेड़ पर चढ़ा और जितने फल चाहिए थे, उतने लेकर अपनी पर्णशाला में चला गया।

मल्लिका ने कुछ जामून के फल खा लिये। "मैंने कहा था कि राक्षस तुम्हें अवश्य फल देगा!" रूपवाण ने उसे न बताया कि राक्षस मर गया था।

उन दोनों योद्धाओं ने उससे कहा—"हमें छोड़ दो। यदि तुमने हम दोनों को कुछ जामून दिये, तो हम दोनों जाकर अलग अलग एक एक जागीर ले लेंगे।"

रूपवाण ने उनको छोड़ दिया। दोनों को मुट्ठी मुट्ठी भर जामून देकर भेज दिया।

उनका स्वाद चखते ही वीरसिंह ने अनुमान किया कि वे महिमावाले जामून थे। चूँकि राक्षस मर चुका होगा, इसलिए ही वे उन्हें मिल सके। उसने झट उठकर कहा—"हम राक्षस वन में जा रहे हैं। रूपवाण को पकड़ने जा रहे हैं। चलो चलें।" सब उसके साथ निकल पड़े।

जब रूपवाण को मालूम हुआ कि राजा राक्षस वन में आ रहा था, तो मल्लिका को लेकर महिमावाले पेड़ पर, पत्तों के झुरमुट के पीछे जा छुपा।

राजा के आदमियों ने सारा जंगल छान डाला। परन्तु रूपवाण का पता कहीं न लगा। केवल वह महिमावाला जामून का पेड़ ही बाकी रह गया था, जिस पर रूपवाण और मल्लिका छुपे हुए थे। इसलिए राजा उस पेड़ के नीचे बैठकर अपने नौकरों के साथ शतरंज खेलने लगा। टहनी पर बैठा रूपवाण यह सब देख रहा था, उसने खेल के बीच में, शतरंज की कौड़ी पर निशाना करके एक जामून फेंका। इससे राजा हार गया।

इस प्रकार तीन बार रूपवाण ने जामून फेंके और राजा को हरवा दिया। इससे राजा जान गया कि पेड़ पर रूपवाण और मल्लिका ही थे। उसने एक युवक से कहा—"तुम तुरत पेड़ पर चढ़ो और रूपवाण को नीचे फेंक दो।"

वह युवक पेड़ पर चढ़ा। रूपवाण ने उसको पास आने दिया। फिर जब उसने छाती पर जोर से लात मारी, तो वह नीचे जा गिरा। महिमावाले पेड़ की इतनी महिमा थी कि जो युवक नीचे गिरा था,

वह राजा की आँखों को बिल्कुल रूपवाण की तरह दिखाई दिया। राजा ने तुरत उसको अपनी तलवार से मार दिया। जब सिर धड़ से अलग हो गया, तो राजा को यह जानकर बड़ा दुःख हुआ कि वह उसका ही आदमी था। उसने एक और युवक को बुलाकर उसे भी पेड़ पर चढ़ने के लिए कहा। उसे भी रूपवाण ने लात मारकर नीचे फेंक दिया। वह भी राजा की आँखों को रूपवाण की तरह दिखाई दिया। राजा ने उसे भी तलवार से मार दिया।

जब राजा ने दो आदमियों को यूँ ही मार दिया, तो और योद्धाओं ने राजा के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। "महाराज, कम से कम अब मनुष्यों का शिकार खतम कीजिये। हमें आपने बहुत-सी तकलीफ़ें दी हैं और खुद सही हैं। राजकुमारी का रूपवाण से प्रेम करना कोई ख़राब नहीं है। उसे क्षमा कर दीजिये। उसके साथ मैत्री कर लीजिये हमारी तो यह सलाह है कि उसका उचित सम्मान भी किया जाना चाहिए। मुट्ठी भर जामून लाने के लिए आपने जागीर देने का वचन दिया। ये

जामून देनेवाला रूपवाण ही था। उसीने ही राक्षस को मारा था।"

यह देख कि परिस्थिति ज़रा उलझ रही थी वीरसिंह ने रूपवाण को क्षमा कर दिया। उसका और मल्लिका का विवाह करवा दिया। उसे उसने एक छोटे राज्य का राजा भी बना दिया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा—"राजा, रूपवाण राजभक्त था, बुद्धिमान था, पर वह एक स्त्री की बात का अतिक्रमण न कर सका, राजा को ही शत्रु बना बैठा और राक्षस के हाथ मरते मरते बचा। उसने यह सब क्यों किया? वह उससे विवाह नहीं करना चाहता था। उस हालत में यदि वह उसके साथ न भागता, तो उसपर कोई आपत्ति आती ही न। उसने क्यों यों फिजूल आफ़त मोल ली? यदि तुमने इन प्रश्नों का जान बूझकर उत्तर न दिया, तो तुम्हारा सिर टुकड़े टुकड़े हो जायेगा।"

विक्रमार्क ने कहा—"जो पानी में डूब रहा हो, उसको बचानेवाला, ज़रूर भीगकर रहेगा। क्योंकि मल्लिका असहाय स्थिति में थी और स्वयं वह समर्थ था, इसलिए रूपवाण ने उसकी सहायता करने का भार अपने ऊपर ले लिया था। असहाय की जो सहायता करता है, उसको उसकी असहाय स्थिति में हिस्सा बंटाना ही पड़ता है। इसलिए ही रूपवाण को इतने कष्ट झेलने पड़े।"

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही, बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और वृक्ष पर जा बैठा।

(कल्पित)

चोरों की नौकरी

भीम चोरों के साथ मिल तो गया, पर चोर जल्दी ही जान गये कि सिवाय शारीरिक बल के उसमें बुद्धि कुछ भी न थी। इसलिए उसे वे ऐसा कोई काम न देते, जिसमें बुद्धि की ज़रूरत होती, उसे हमेशा ऐसे मोटे काम ही देते जिनमें शारीरिक बल की आवश्यकता होती।

एक दिन रात को चोर, एक धनी के घर चोरी करने के लिए भीम को भी साथ ले गये।

उन्होंने सेंध लगाई। भीम को घर के अन्दर भेजते हुए कहा—"तुम वे चीज़ें ही उठाकर हमें इस सेंध में से पहुँचाओ, जो भारी हों, उनका यह ख्याल था कि कीमती चीज़ें, भारी भारी सन्दूकों में ही थीं।"

भीम उनका कहना मान गया। उसने सारा घर छान डाला। सब चीज़ें उठाकर देखीं। बड़े बड़े सन्दूक भी उसे हल्के हल्के लगे।

आखिर उसे रसोई में सिल दिखाई दी, उसने उसे हिला तो दिया, पर जब उसने उसे उठाना चाहा, तो वह उठा न सका।

"यह ही चोर चाहते हैं। यदि कोई मदद करे, तो इसे कन्धे पर उठाकर ले जाया जा सकता है।" यह सोचकर उसने जब इधर उधर देखा, तो उसको रसोइया घर के एक कोने में सोता दिखाई दिया।

भीम उसके पास गया। उसे उठाकर उसने कहा—"जरा उठो, इस "सिल" को उठाने में मदद तो करो।"

रसोइये ने उठकर पूछा—"कौन हो तुम? सिल उठाने में मदद चाहते हो?"

"यह चोरों को चाहिये। ये सेन्ध लगाकर बाहर बैठे हैं। यह "सिल" ही ऐसी चीज़ है जो मैं अकेला उठा नहीं पा रहा हूँ।" भीम ने कहा।

रसोइया जोर से चिल्लाया "चोर, चोर" सब ने उठकर भीम को पकड़ लिया।

वह शोर सुन चोर चम्पत हो गये। घरवालों ने भीम से तरह तरह के प्रश्न किये।

उन्होंने भी यह जानकर कि वह कतई मूर्ख था, छोड़ दिया। वह अपने मालिक चोरों को ढूँढ़ता गया।

चोरों ने उसे बुरी तरह डाँटा फटकारा। उन्होंने उसे नौकरी में से निकालने की सोची। परन्तु जब उसने कहा कि वह आइन्दा अक्लमन्दी से काम लेगा, तो उन्होंने उसे क्षमा कर दिया।

अगले दिन चोर एक जमीन्दार के घर चोरी करने गये। उनके साथ भीम भी था।

इस बार सेन्ध लगाकर भीम को मकान के अन्दर भेजते हुए कहा—"इस बार "सिल" के पास न जाना, यह रेत ले जाओ। ऊपर जाकर, यह रेत

छिड़को। जो चीज़ रेत पड़ने पर गल गल ध्वनि करे, उस चीज़ को उठा लाओ।"

भीम चोरों से रेत की बोरी लेकर मकान में घुसा। वहाँ बहुत से लोग सो रहे थे। कुछ मुख खोल कर खुर्राटे मार रहे थे। कुछ चुपचाप पड़े थे।

"चोरों ने रेत छिड़कने के लिए कहा था। यदि रेत छिड़की गई, तो क्या वह इनके चेहरों पर और मुख में नहीं पड़ेगी?" यह सोच भीम जोर से चिल्लाया—"अरे, मैं रेत छिड़कने जा रहा हूँ। जो कोई सो रहे हों, वे मुँह ढक लें।"

उसका चिल्लाना सुन, सब उठ गये। शोर शराबा हुआ, चोर भाग गये।

घरवालों ने भी कुछ देर बाद भीम को जाने दिया। वह फिर चोरों के पास गया।

इस बार फटकार तो मिली ही, भीम को चोरों ने मारा भी।

वह गिड़गिड़ाया कि उसे माफ़ कर दिया जाय। "यदि फिर तुमने इस तरह का काम किया, तो तुम्हारा सिर काट दिया जायेगा। जरा सम्भल कर रहो।" चोरों ने उसे खबरदार किया।

उसके बाद चोर राजा का महल लूटने गये। उस में धान के कमरे और तरह तरह की चीज़ों से भरे अलग अलग कमरे थे। एक एक कमरे को लूटने के लिए एक एक चोर को चुना गया।

भीम को बाहर छोड़ दिया गया और उसे हिदायत की गई कि यदि कोई खटका हो तो वह शृंग वाद्य ज़ोर से बजाये। उसका शोर सुनते ही चोर भाग जायेंगे।

जब चोर अन्दर चले गये, तो भीम कुछ देर अकेला खड़ा रहा, "यहाँ तो खटके की कोई बात नहीं है," सोचकर वह भी अन्दर गया।

अन्दर जाते ही उसे पशुशाला दिखाई दी। उस में एर चोर ने एक गौ खोलनी चाही। वह गौ ज़रा अकड़ थी, पास आते ही सींग मारती थी। एक आदमी अकेला उसे नहीं खोल सकता था।

इसलिये चोर ने, पास खड़े भीम को नहीं देखा। "अरे, बाबा, ज़रा शृंग (सींग) तो पकड़ो।" तुरत भीम ने बगल में से शृंग वाद्य निकाला, और ज़ोर से उसे बजाया।

यह शोर सुन राजा के सैनिक उठ गये। चोर यह न समझ सके कि वाद्य की आवाज बाहर से न आकर, अन्दर से क्यों आयी थी, वे जहाँ थे, वहीं खड़े हो गये। और वे सैनिकों द्वारा पकड़े गये।

राजा ने चोरों को पकड़ लिया। उनको आजीवन कैद की सजा दी। चोरों को पकड़वाया था, इसलिये भीम को पाँच सौ रुपये नकद दिये गये, और उसे बहुमूल्य अंगूठी भी दी गई। उनको लेकर, वह अपने घर की ओर निकल पड़ा।

खलीफ़ाओं की सम्पत्ति

खलीफ़ा हरून अल रशीद के पोते के पोते, अल मुतसिद बिल्ला जब छटे खलीफ़ा के पद पर बगदाद का परिपालन किया करता था, तब एक घटना हुई।

एक दिन खलीफ़ा वेश बदलकर, अपने आन्तरंगिक मित्र, हम्दून के साथ नगर में घूम रहा था। वह एक संगमरमर के पत्थर पर बैठा विश्राम कर रहा था कि उसे सामने एक बाग दिखाई दिया। बाग के बीच में एक मकान था, जो ठीक तरह न दिखाई दे रहा था। खलीफ़ा अक्ल का बड़ा तेज था। वह तुरत जान गया कि वह मकानवाला हो न हो अक्लमन्द और अच्छी अभिरुचिवाला था।

इतने में उस घर के नौकर लड़कों की बातें खलीफ़ा के कानों में पड़ी।

"आज मालिक को खाना पसन्द न आयेगा। उनके साथ भोजन करने के लिए एक अतिथि भी नहीं आया।" एक नौकर लड़के ने कहा।

"अगर कोई बाग देखने आये तो क्या अच्छा हो।" दूसरे नौकर ने कहा। यह सुन खलीफ़ा ने हम्दून से पूछा—"क्यों भाई सुना?" वह आदमी, जो हमेशा अतिथियों के लिए तरसता रहता है, क्या अजीब नहीं है?

"इस तरह के आदमी का परिचय जरूर पाना चाहिये।" हम्दून ने कहा। उसने खलीफ़ा की अनुमति पर उन लड़कों को बुलाकर कहा—"तुम अपने मालिक से कहो कि दो दूर देश के व्यापारी उन्हें देखने आये हैं।"

लड़के बड़े खुश हो भाग गये। थोड़ी देर बाद उस मकान के मालिक ने वेश बदले हुए खलीफ़ा और हम्दून का स्वागत

रामदेव

किया और उन्हें अन्दर ले गया। उनको अच्छा भोजन और अच्छे पेय दिये। इस आतिथ्य से खुश होकर हम्दून गाने गाने लगा। परन्तु खलीफ़ा के चेहेर पर खुशी तो अलग, नाराजगी दिखाई देने लगी। वह अतिथि का विनय और कर्तव्य ही भूल गया। उसने कड़ी आवाज़ में जोर से पूछा—"तुम कौन हो?"

"मुझे अबू अल हसन अलि इबन कहते हैं।" घरवाले ने कहा।

"तुम जानते हो, मैं कौन हूँ?" खलीफ़ा ने अहमद से पूछा।

"माफ कीजिये, मेरा आपसे परिचय नहीं है।" अहमद ने कहा।

इतने में हम्दून ने खलीफ़ा का उससे परिचय कराया। अहमद ने खलीफ़ा के पैरों पर पड़कर कहा—"यदि मैंने अनजाने कोई गल्ती कर दी है, तो हुजूर मुझे माफ करें। मेरे आतिथ्य में तो कोई कमी नहीं थी?"

"ऐसी तो कोई बात नहीं थी। तुम्हारा आतिथ्य तो राजाओं के अनुकूल है, उसमें कोई भी कमी नहीं है।"

"तुम्हारे घर की वस्तुओं पर मेरे दादा, खलीफ़ा भला अल्लाह के चिन्ह हैं। यह कैसे सम्भव हुआ? तुमने हमारे पूर्वजों की सम्पत्ति लूटने का साहस किया। यदि तुमने कैफियत न दी तो तुम्हारे प्राण निकलवादूँगा।"

यह सुन अहमद मुस्कराया। उसका मन स्थिर-सा हो गया। मैं कहानी सुनाता हूँ। सुनिये। उसने कहना शुरु किया।

"मेरे पिता बड़े वंश में पैदा नहीं हुए थे। फिर भी वे बगदाद के व्यापारियों में सब से अधिक धनी और जाने माने थे। उनकी दुकानें शहर के कोने कोने में थीं।

मैं उनकी सम्पत्ति का उत्तराधिकारी बना। मैं बिना किसी कमी के आराम से यार दोस्तों के साथ आनन्द में जीवन निर्वाह करता रहा। मजे में समय काटता रहा।"

एक दिन जब मैं एक दुकान के सामने बैठा था, एक सुन्दर लड़की दुकान के पास आ खड़ी हुई। "अबू अल हसन इब्न अहमद की दुकान क्या यही है?" वह लड़की, तभी जवानी में कदम रखती लगती थी। उसे देखते ही उससे मुझे प्रेम हो गया। जब मैंने बताया कि मैं ही अहमद था, और वह मेरी ही दुकान थी, तो वह अन्दर आकर बैठ गई। "मुझे तीन सौ दीनारें चाहिये। आप अपने मुनीम से देने के लिए कहिये।" मेरी आज्ञा पर मेरे खजान्ची ने उसे दीनारें दे दीं। वह धन लेकर उसने यह भी न कहा कि जा रही हूँ। शान से बाहर चली गई।

"यह धन किसके हिसाब में लिखा जाय?" खजान्ची ने पूछा।

"मैं भी क्या जानूं? क्या खाते में अप्सराओं के नाम होते हैं?" मैंने पूछा।

हमारा खजान्ची इतने से माननेवाला न था। वह उसके पीछे पीछे भागा भागा

गया। जब उसने उससे नाम वगैरह पूछा, तो उसने उसके मुख पर चपत जमा दी। वह रोता धोता वापिस चला गया।

मैं दिन भर उसके बारे में ही सोचता रहा। अगले दिन वह फिर इस तरह दुकान पर आई, जैसे कुछ हुआ ही न हो। आते ही कहा—"मैं कल आपको खूब चकमा दे कर चली गई थी, यही तो आप सोचते हैं।"

"खुदा की कसम, मैंने कभी न सोचा—तुम अपनी ही चीज़ ले गईं। यह दुकान तुम्हारी है। मैं भी तुम्हारा हूँ।"

"यही बात है, तो मुझे पाँच सौ दीनारें दीजिये।" उसने कहा। मैंने फिर पाँच सौ दीनारें दे दी। दीनारें लेकर बिना कुछ कहे वह चली गई। उसके बाद वह एक दिन दुकान में आई। हीरे, मोती जड़े मखमल की ओर अंगुली से इशारा किया। मैंने हीरे-मोती के साथ मखमल का कपड़ा उसे दे दिया।

इस तरह तीन दिन जब गुज़र गये तो हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना ठीक न लगा। खज़ान्ची की तरह, मैं भी चपत खाने के लिए तैयार हो गया। इसलिए मैं उसके पीछे ही निकल पड़ा। वह जल्दी ही टिग्रिस नदी के पास पहुँची। एक छोटी नाव में नदी पार की और आपके दादा के महल में चली गई। उसको पाना कितना मुश्किल था, मैं जान गया।

मैंने घर आकर माँ से कहा कि मैं एक लड़की से प्रेम करने लगा था। यदि वह खलीफ़ा के परिवार की है, तो भी मैं जी जान से उससे शादी करने का प्रयत्न करूँगा।

"अरे, तुम मज़े में हो, क्यों आफ़त मोल लेते हो? इस लड़की की बात भूल जाओ।" मेरी माँ ने कहा।

"जो किस्मत में लिखा है, वह होकर रहेगा। अल्लाह है ही।"

एक दिन जब मैं अपनी गहनों की दुकान में था, तो हमारी आढ़त का व्यापार देखनेवाला बूढ़ा आया। मेरे पिता को उस पर बड़ा विश्वास था। उसने मुझे देखकर सोचा कि मैं बीमार था। मैंने उससे कहा कि सिवाय प्रेम के मुझे कोई रोग न था।

उसने सुनकर कहा—"अरे, अच्छी आफ़त है। फिर भी खलीफ़ा के महल में मेरी जान पहिचान का दर्जी है। वह महल के नौकरों के कपड़े सीता है। मैं तुम्हारा उससे परिचय करा दूँगा। उसको कोई काम दो, और ढेर-सा पैसा दो, वह तुम्हारी किसी न किसी तरह मदद कर सकता है।"

वह मुझे राजा के महल के आहाते में, उस घर में ले गया, जहाँ दर्जी रहा करता था। मैंने अपने अंगरखे की जेब फाड़ दी और उससे जेब सीने के लिए कहा। उसने उसे उस तरह सिया कि कहीं सिलाई न दिखाई दी। मैंने उसको दस दीनारें दीं।
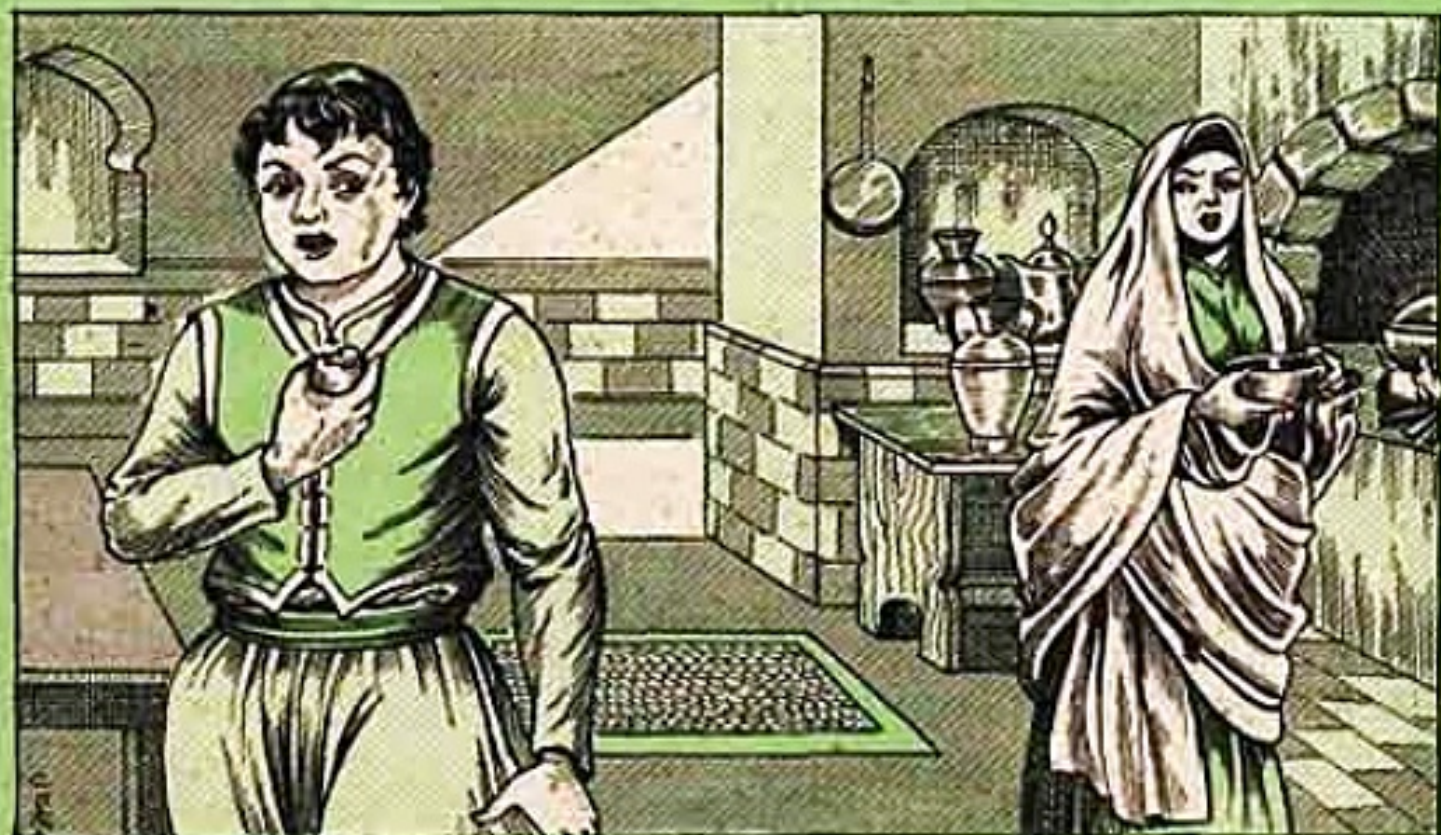
दर्जी ने मेरी ओर आश्चर्य से देखकर कहा—"बाबू, यह तो कुछ अजीब बात मालूम होती है, कहीं आप प्रेम के जाल में तो नहीं हैं!" मैंने कहा कि महल की एक लड़की ने मेरा दिल हर लिया है। मैं उसका नाम भी नहीं जानता। मैंने उसका वर्णन किया। सब सुन दर्जी ने कहा—"आप जिस लड़की की बात कह रहे हैं, वह मोती होगी। खलीफ़ा उससे गाने गवाये करते हैं।"

उसी समय दुकान की ओर एक लड़का नौकर आता दिखाई दिया। दर्जी ने कहा कि वह नौकर मोती का ही था। लड़के ने दीवार पर—खूँटी पर टंगे कपड़ों में से एक कुड़ता निकाल कर पूछा—"इसका दाम क्या है?" मैंने कुड़ता निकालकर उसके हाथ में देते हुए कहा—"ले लो, इसके दाम दर्जी को मिल चुके हैं।"

उस लड़के ने मुझे देखकर शरारतभरी हँसी हँसी। मुझे अलग ले जाकर उसने पूछा—"आप अबू अल हसन इबन अहमद हैं न?"

"तुम्हें कैसे मालूम हुआ?"

"बिना जाने कैसे रह सकता हूँ। रोज़ कम से कम पचास बार हमारी मालकिन आपका नाम लेती हैं। जितना प्रेम उनको आप पर है, यदि उसमें से आधा भी आप में हो, तो मैं आज उनके पास ले जाऊँगा।" लड़के ने कहा।

जब लड़के को मालूम हुआ कि मैं मोती के लिए प्राण तक भी देने के लिए तैयार था, तो वह मुझे थोड़ी देर ठहरने के लिए कह चला गया, फिर थोड़ी देर बाद, एक थैली लेकर आया। उसमें खलीफ़ा के नाम की हरी पोशाक थी। हर रोज़ रात को वह पोशाक पहिनकर,

खलीफ़ा अपने अन्तःपुर में जाया करता था। जिन स्त्रियों को चाहता था, उनके कमरे एक कतार में थे। जब वह उन कमरों के बीच में से गुज़रता, तो उन कमरों के सामने रखे पात्रों में, वह थोड़ी थोड़ी कस्तूरी रखता। लड़के ने यह सब बताकर कहा—"उसी रास्ते जाते जाते, तुम्हें नीले संगमरमर का चौखटवाला दरवाज़ा दिखाई देगा। उस दरवाज़े को खोलकर जायेंगे, तो हमारी मालकिन दिखाई देंगी।"

मैंने कभी ऐसे काम न किये थे, पर जब उतनी दूर गया था, तो आगे जाना ही था। इसलिए मैंने खलीफ़ा की पोशाक पहिनी। कस्तूरी का डब्बा लेकर, मैं इस तरह चला जैसे उस महल में हमेशा घूमता रहा हूँ। मैं उस जगह गया, जहाँ खलीफ़ा की विशेष स्त्रियाँ रहा करती थीं। मैं दरवाज़ों के पास रखे पात्रों में कस्तूरी रखता चला गया। मैं चलता चलता नीले संगमरमर के चौखटवाले दरवाज़े के पास गया। मैं दरवाज़ा खोल रहा था कि पीछे से मुझे किसी की आने की आहट सुनाई दी। मुड़कर जो देखा, तो बहुत-सी मशालें दिखाईं दीं। खलीफ़ा ही आ रहे थे।
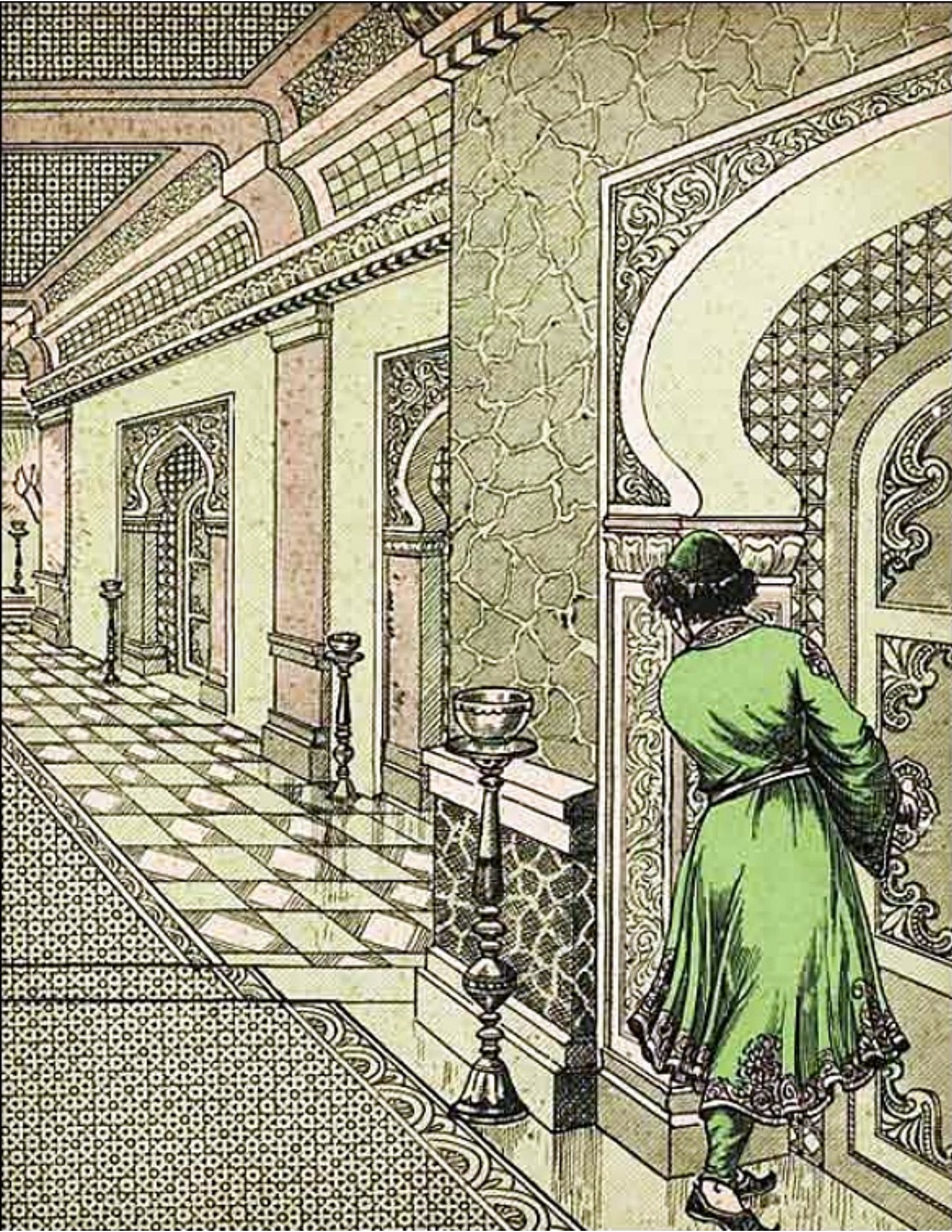
मेरी जान मानों निकल ही गई। मैं पीछे नहीं जा सकता था, इसलिए आगे ही भागा, कितनी दूर भागता? कहाँ जाता? कहीं छुप जाने के लिए एक दरवाज़ा जो दिखाई दिया, तो उसे खोलकर अन्दर चला गया।

मुझे देखते ही अन्दर की स्त्री खड़ी हो गई और मुँह पर पतला-सा घूँघट निकाल लिया। यदि वह चिल्लाती तो मेरी जान निकाल दी जाती। मुझे या तो फाँसी दी जाती, नहीं तो मेरा सिर कटवा दिया जाता। उस लड़के की बात सुनकर मैं अच्छी आफ़त में आ फंसा था। मैं अपने को ही कोसने लगा। मैं स्त्री को गौर से देखने लगा।

इतने में घूँघट के पीछे से अजीब बातें सुनाई देने लगीं—"अबू अल हसन हैं! स्वागत है। मेरी बहिन आप पर प्राण देती है। उसने आपको अच्छी परीक्षा दी। आप पास हो गये हैं। सौभाग्य से आप मेरे कमरे में आये हैं, यदि आप किसी कमरे में जाते, तो आपकी आयु खतम हो जाती। आप उठिये नहीं। मैं आपकी मदद करूँगी। परन्तु मुझे एक बात तो बताइये। आप मोती का क्या करना चाहते हैं?"

"मैं तुम्हारी बहिन का कुछ नहीं बिगाड़ना चाहता। यदि मैं उसको एक बार देख लूँगा, तो मैं धन्य हो जाऊँगा।"

उसने नौकर को बुलाकर कहा—"तुम मेरी बहिन मोती के कमरे में जाओ। कहो कि मैंने बुलाया है।"

मोती आयी। मुझे देखकर वह बिल्कुल न डरी। वह हाथ पसारकर मेरे पास आई। उसी समय बाहर आहट हुई। बहिनों ने मुझे एक बड़े बाक्स में रखकर

बन्द कर दिया। थोड़ी देर बाद खलीफ़ा वहाँ आया।

उसने उन दोनों को देखकर पूछा—"तो दोनों बहिनें एक ही जगह हैं। मोती, तुम दो दिन कहाँ गायब रही? तुम्हारा गाना सुने बहुत दिन हो गये हैं—एक अच्छा गाना तो सुनाओ।"

मोती तो पहिले ही खुश थी। उस दिन खूब गाई। खलीफ़ा ने खुश होकर कहा—"तुम्हारे गले में कितनी मिठास है। मोती, माँगो क्या चाहती हो, मैं अपना आधा राज्य तक दे दूँगा।"

"हुज़ूर, मुझ पर और मेरी बहिन पर मेहरबानी बनाये रखें, बस और कुछ नहीं चाहिए।"

"मैं दूँगा, तुम ले लो—कुछ तो माँगो।" खलीफ़ा ने प्रेम से पूछा।

"यही बात है, तो मुझे गुलामी से रिहा कर दीजिये। जो कुछ इस कमरे में है, वह सब मुझे दे दीजिये।" मोती ने कहा।

"तो दे दिया।" खलीफ़ा ने कहा।

फिर खलीफ़ा चला गया। मोती ने नौकरों को बुलाकर कमरे का सारा समान निकलवाया और बक्से के साथ सब कुछ मेरे घर पहुँचा दिया और कहने की ज़रूरत भी क्या है। उसी दिन मेरा मोती के साथ विवाह हो गया।

इस प्रकार आपके दादा की चीज़ें और पोषाक मुझे मिलीं। मैंने सब कुछ बता दिया है, कुछ नहीं छुपाया है।

अहमद की यह कहानी सुनकर मुतसिद बिल्ला बड़ा खुश हुआ। उसने अहमद के सब कर माफ़ कर दिये और उसको अपना मित्र बना लिया।

❋ पूर्ण घट ❋

एक गाँव में एक किसान के एक लड़का था। उसका नाम सोमू था। वह पूर्ण घट-सा था। इसलिए उसके धैर्य-साहस और शक्ति-सामर्थ्य के बारे में किसी को कुछ न मालूम था। एक रोज़, सोमू के पिता ने उसे खेत में माँड़ लाने के लिए कहा। सोमू की लापरवाही से माँड़ रास्ते में गिर गई। मज़दूरों को माँड़ भी न मिल सकी।

पिता ने सोमू को बुरी तरह डाँटा, फटकारा। "तुम निरे मूर्ख हो, किसी काम के नहीं। तुम्हें खाना देना भी फ़िज़ूल है। तुम जाकर अपना पेट खुद पालो, जाओ।"

"जब इतनी फटकार पायी है, तो भला मैं भी क्यों यहाँ रहूँगा। मुझे एक अच्छी लोहे की गदा बनवाकर दिलवा दो और मुझे कुछ नहीं चाहिए।"

किसान लुहार के पास गया। आधा मन भारी गदा बनवाकर लाया, उसे सोमू को दी। जब सोमू ने उसे एक बार घुमाया, तो उसके दो टुकड़े हो गये। किसान ने इस बार मन भर की गदा बनवाकर दी। जब उसे दो बार सोमू ने घुमायी, तो उसके भी दो टुकड़े हो गये। किसान ने दो मन की गदा बनवायी। सोमू ने जब उसे घुमाया, तो वह झुक तो गई, पर वह टूटी नहीं।

"खैर, काम आ जायेगी।" कहकर सोमू ने गदा को घुटने पर रखकर सीधी कर दी। उस गदा को लेकर वह नौकरी के लिए राजा के पास गया।

"तुम क्या काम कर सकते हो?" राजा ने पूछा।

"पशुओं के चराने के सिवाय मैं कोई और काम नहीं जानता।" सोमू ने कहा।

"मैं ऐसा आदमी चाहता हूँ, जो गौओं को चरा सके। कितना वेतन चाहते हो?", राजा ने पूछा।

"खाना और साल भर के लिए सौ रुपये मिल गये, तो काफी है।" सोमू ने कहा।

"वेतन तो अधिक ही माँगा है, यदि चरते चरते कोई गौ गुम न हुई, तो जो वेतन माँगा है, वह दूँगा। कितनों को ही इस काम पर रखा है। परन्तु मेरी गौवें एक एक करके गुम होती ही गईं।" राजा ने कहा।

"मैं आपकी गौवों को गुम नहीं होने दूँगा।" सोमू ने बचन दिया और राजा के यहाँ वह नौकरी करने लगा। अगले दिन वह सवेरे ही उठा। गदा बगल में रखकर गौवों को लेकर वह पहाड़ों में गया। जब गौवें चर रही थीं, तो वह छोटी छोटी लकड़ियाँ चुनने लगा।

इतने में एक राक्षस इस तरह आया कि भूमि ही काँप उठी। सोमू के पास आकर उसने भर्राती हुई आवाज़ में पूछा—"तुम कौन हो?"

"अरे, बाप रे बाप मैं तो डर ही गया था। मैं वैसे ही डरपोक हूँ। यदि तुम गौ चाहते हो, तो ले जाओ।" राक्षस को देखकर, सोमू ने कहा। राक्षस ने मोटी ताज़ी गौ देखी, उसे गिरा दिया। फिर बेलों से उसके चारों पैर बाँध दिये। "अरे लड़के इसे कन्धे पर रखना है, ज़रा हाथ तो दो।"

"बाप रे बाप, मैं तो तुझे देखकर ही डर रहा हूँ। मैं नहीं आऊँगा।" सोमू ने कहा।

"मैं तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ूँगा, आओ।" राक्षस ने कहा।

सोमू ने इस तरह दिखाया, जैसे बहुत डर रहा हो। राक्षस के पास आया। उससे कहा—"तुम गौ के पैरों के बीच सिर रखो। मैं गौ को तुम्हारे कन्धे पर लाद दूँगा।" सोमू के कहे अनुसार राक्षस ने गौ के पैरों के बीच में सिर दे दिया। तुरत सोमू ने पीछे से राक्षस के गले पर जोर से गदा मारी। गदा की चोट से राक्षस वहीं ठंडा हो गया। सोमू ने उसके सिर को एक पेड़ पर पत्तों में छुपा दिया। उसके धड़ को एक नाले में गाड़ दिया। शाम होते होते ही, वह गौवों को लेकर घर की ओर निकल पड़ा।

राजा रास्ते में ही उसे मिला। सब गौवों को घर वापिस आता देख, उसे आश्चर्य हुआ। "अच्छा, तो बताओ, गौवें चरागाह में कैसे चरती रहीं?"

"पेड़ पर पत्ते हैं और नाले में पानी है, इसमें ऐसी कौन-सी बड़ी बात है।" सोमू ने कहा।

जब अगले दिन सोमू गौवों को ले गया, तो एक और बड़ा राक्षस आया। जो कल आया था, वह उसका बड़ा भाई था। इसको भी सोमू ने उसी तरह मार दिया। उसके सिर को भी पेड़ों के पत्ते में रख दिया और धड़ को नाले में गाड़ दिया। शाम होते ही वह घर की ओर निकल पड़ा। आज भी उसे राजा रास्ते में मिला। फिर सब गौवों को वापिस आता देख, उसे और आश्चर्य हुआ। "तो सोमू, आज क्या बात है?"

"दिन भर धूप पड़ती रही, गौवें खूब चरती रहीं, इसमें कोई बड़ी बात है?" सोमू ने कहा।

"बस इतनी ही, और कुछ न हुआ?" राजा ने पूछा।

"और क्या है!" सोमू ने कहा।

तीसरे दिन एक और बड़ा राक्षस आया। उसको भी सोमू ने उसी तरह मार दिया। इस तरह न मालूम कितने राक्षस आयेंगे, जाने क्या हो, वह आश्चर्य करने लगा।

जब चौथे दिन चरागाह में गौवें चर रही थीं और वह लकड़ियाँ चुन रहा था कि मरे हुए राक्षसों की माँ ने आकर कहा—"क्या तुम ने ही मेरे तीनों लड़कों को उठाया है!" कहती वह राक्षसी उस पर टूट पड़ी। वह सोमू से कम बलवाली न थी। पर सोमू उसकी पकड़ में न आया। अपनी गदा से उसने उसकी दोनों टाँगें तोड़ दीं। वह न हिल सकी, न दर्द ही सह सकी। सोमू से उसने कहा कि वह उसे भी मार दे।

"मैं तुम्हारा दर्द हटा दूँगा, तो क्या दोगे!" सोमू ने पूछा।

"इस रास्ते जाओगे तो मेरी गुफ़ा आयेगी। उसमें बहुत-सा सोना और बहुत-सी चान्दी है। उसे ले लो और मेरी जान भी ले लो।" राक्षसी ने कहा।

सोमू ने उसे भी मार दिया। उसका सिर पेड़ पर पत्तों में छुपा दिया और धड़ को नाले में गाड़ दिया।

पर आज, रोज की तरह राजा उसको रास्ते में न मिला। अब वह कारण जानने के लिए महल में गया तो वहाँ जोर जोर से रोना धोना हो रहा था।

उत्तर की ओर की गुफ़ावाले तीन सिरों का राक्षस, उस दिन दुपहर को आकर राजा से कह गया था सूर्यास्त से पहिले अपनी लड़की को मेरी गुफ़ा में पहुँचाओ, नहीं तो मैं तुम्हारे घर का नाश कर दूँगा।" सोमू के आने से पहिले ही

रसोइया—राजकुमारी को उत्तर की गुफ़ा की ओर ले गया था।

यह सुनते ही, सोमू गदा लेकर उत्तर की गुफ़ा की ओर भागा। जब वह वहाँ पहुँचा, तो राजकुमारी गुफ़ा के बाहर एक पत्थर पर बैठी लगातार रोती जा रही थी। रसोइया एक बड़े पत्थर के पीछे छुपा यह सब देख रहा था। सोमू के वहाँ पहुँचते ही राजकुमारी का कुछ धीरज बँधा। वह रसोइये की तरह डरा नहीं। वह राजकुमारी की बगल में ही खड़ा हो गया। उसने कहा—"डरो मत, जरा-सा मौका मिला कि नहीं मैं इस राक्षस को मार दूँगा।"

सूर्यास्त हो रहा था कि तीन सिरोंवाला राक्षस गुफ़ा से बाहर आया। क्योंकि वह अन्धेरे में से आ रहा था, इसलिए रोशनी में उसकी आँखें चौंधिया गईं। उसने आँखें मूँद लीं। उस समय सोमू ने जोर से अपनी गदा उसके गले पर मारी। उस चोट से राक्षस मर गया। पर सोमू ने इतनी जोर से गदा घुमायी कि वह चित्त गिर गया। उसके हाथ से खून बहने लगा। राजकुमारी ने अपनी साड़ी फाड़कर उसके घाव पर बाँध दी।

फिर सोमू यह कहकर घर चला गया कि उसे नीन्द आ रही थी। रसोइये ने राजकुमारी को घर पहुँचाया। उसने राजा से कहा—"महाराज, जैसे भी हो, मैंने उस तीन सिरवाले राक्षस को मार दिया और राजकुमारी को बचाया। राक्षस के चले जाने के बाद आपने कहा था कि जो कोई राक्षस को मार देगा, आप उसका राजकुमारी के साथ विवाह कर देंगे।"

रसोइये ने मालूम कर लिया था कि सोमू राजा से कुछ न कहेगा। यदि वह कहनेवाला ही होता, तो घर जाकर सोता नहीं और उसका ख्याल था कि राजकुमारी उसे छोड़कर गौवें चरानेवाले से शादी नहीं करेगी।

राजा ने रसोइये की बात का विश्वास कर लिया और अगले दिन ही विवाह की व्यवस्था कर दी। सवेरे उठते ही राजकुमारी को पता लगा कि उसका रसोइये से विवाह होनेवाला था। उसने राजा से इस बारे में पूछा और कहा—"यदि मेरी शादी ही करनी है, तो सोमू से कीजिये। तीन सिरवाले राक्षस को उसने ही मारा है।"

राजा ने जब सोमू को बुलाया तो उसने उन सब राक्षसों की, जिन जिन को उसने मारा था, सूची दी। उसने यह भी बताया कि उसने बहुत-सा सोना और चान्दी भी जमा कर ली थी।

यही नहीं, राजा भी जान गया कि सोमू पूर्णघट की तरह था। यह उसे बहुत भाया। उसने सोचा कि उससे अच्छा दामाद उसे न मिलेगा। उसने अपनी लड़की का उससे विवाह कर दिया और झूट बोलनेवाले रसोइये को नगर से भेज दिया।

अयोध्या काण्ड

लक्ष्मण पति-पत्नी का सम्भाषण सुन रहा था। उसने कहा—"भैय्या, यदि आपने वन जाने का निश्चय कर लिया है, तो मैं भी आपके साथ आऊँगा।"

राम ने इसके लिए अनुमति न दी। "यदि तुम और हम चले गये, तो हमारी माताओं को देखनेवाला कोई न रहेगा। तुम उनकी देखभाल करते यहीं रहो।"

लक्ष्मण ने यह न माना। उसने कहा—"मैं, दिन रात आपका काम करता रहूँगा। मुझे आपके साथ आना ही होगा।"

राम ने सन्तुष्ट होकर उसका आना स्वीकार किया। लक्ष्मण को उन्होंने वशिष्ठ से दिव्य अस्त्रों को लाने के लिए कहा। उनमें अक्षय तूणीर, भयंकर धनुष, दुर्भेद्य कवच थे। सोने से मढ़ी हुई दो तलवारें थीं। लक्ष्मण ने अपने मित्रों के पास जाकर कहा कि वह वन जा रहा था। उसने वशिष्ठ के यहाँ से अस्त्र लाकर दिये।

फिर राम ने यात्रा दान किये। वशिष्ट के लड़के सुमत्र को बुलाकर उसकी पत्नी को सीता से उसके आभूषण, पलंग, गद्दे, दिलवाये और उन्होंने स्वयं शत्रुंजय नामक हाथी और अनेक हाथियों को दान दिया। अगस्त्य, कौशिक आदि ब्राह्मणों को, कौशल्या के पास रहनेवाले एक बूढ़े पंडित को, दशरथ के विश्वासपात्र चित्र रथ सारथी को, ब्रह्मचारियों को

असंख्य गौवें, सोना, मणि, और कपड़े दान में दिये।

अयोध्या के पास जंगल में एक बूढ़ा ब्राह्मण रहा करता था। उसका नाम त्रिपक था। उसके बहुत से बच्चे और जवान पत्नी थी। वह कन्द फल खाकर जीवन निर्वाह कर रहा था।

उसे मालूम हुआ कि राम यात्रा दान कर रहे थे। वह फटे, कपड़े ओढ़कर राम के पास आया। उसने कहा—"राजपुत्र! मैं गरीब हूँ। मेरे बहुत से बच्चे हैं। माँग कर जीवन व्यतीत कर रहा हूँ। जरा मुझ पर कृपा करो।"

राम ने कहा—"तुम एक लाठी जितनी दूर फेंक सको उतनी दूर फेंको। उस फासले में जितनी गौवें आयेंगी मैं उतनी गौवें दे दूँगा।"

बूढ़े त्रिपक ने जब लाठी फेंकी, तो वह सरयू नदी के उस पार गिरी। राम ने त्रिपक का स्नेहवश आलिंगन किया। "मैंने यूँ ही कहा था। बुरा न मानो। "मैंने केवल यह जानना चाहा था कि तुम्हारी तपश्शक्ति कितनी थी। जितनी गौवें देने के लिए कहा था उतनी तो दूँगा ही और भी जो चाहो, माँगो।" त्रिपक ने राम को आशीर्वाद दिया। गौवों के झुन्ड को अपने आश्रम ले गया। इस प्रकार दान आदि से सबको प्रसन्न करके राम, सीता लक्ष्मण को साथ लेकर पिता के नगर की ओर गये।

उन तीनों को गलियों में पैदल जाते देख छत पर से देखनेवाले, मकानों में से देखनेवाले क्रुद्ध हो उठे। वे आपस में यों बातें करने लगे।

"देखो भाई, राम, पत्नी और भाई को साथ लेकर कैसे पैदल जा रहे हैं! लगता है, इस दशरथ के सिर पर कोई

भूत सवार है। चाहे कोई कितना भी दुष्ट हो, राजा उसे जंगलों में तो नहीं भेजता। अच्छे राम को जंगल में भेज रहे हैं। यदि हम सब अपने परिवारों के साथ राम के साथ निकल पड़े, तो इनको पता लगेगा।"

नागरिकों की ये बातें सुनते, सीता, राम लक्ष्मण, दशरथ के नगर में पहुँचे। उन्होंने सुमन्त्र द्वारा खबर भिजवाई कि वे राजा को देखने आये थे। दशरथ ने सुमन्त्र से सीता, राम लक्ष्मण को बुलाकर लाने के लिए कहा।

जब राम हाथ जोड़कर आये, तो दशरथ और उनकी अन्तःपुर की स्त्रियाँ उठ खड़ी हुईं। दशरथ राम से मिलने गये, और बीच में ही गिर गये। उन्हें उठाकर बिठाया गया।

जब दशरथ को होश आया, तो राम ने कहा—"महाराज, मैं दन्डकारण्य जा रहा हूँ। आप प्रभु हैं, इसलिए आपकी आज्ञा के लिए आया हूँ। मैंने बहुत कहा, पर उन्होंने न सुनी। सीता और लक्ष्मण भी साथ आ रहे हैं। उनके वनवास के लिए भी अनुमति दीजिये।"

दशरथ ने राम से कहा—"बेटा, मैं कैकेयी को वर देकर ठगा गया। तुम मेरी आज्ञा का उलंघन करके पट्टाभिषेक कर लो।"

"आप असत्यभाषण की निन्दा न मोल लीजिये। वन में जाने के लिए मुझे कोई आपत्ति नहीं है। चौदह वर्ष काटकर मैं फिर आपके पास आऊँगा।"

"आज ही क्या तुम्हें जाना है? आज रात यहाँ रहो। जो कुछ हमसे करवाना है। वह करवा लो। एक दिन यहाँ रहो। फिर सवेरे उठकर तुम जंगल में जा सकते हो।" दशरथ ने कहा।

"पिता जी आप यही समझ लीजिये कि आपने हमारी सब इच्छायें पूरी कर दी हैं। आप हमें आशीर्वाद देकर भेज दीजिये। वन में हमें कोई कठिनाई न होगी। हम बहुत से पहाड़ और झीलें देखेंगे।" राम ने कहा।

राम को वन में जाता देख, दशरथ को दुखी होता देख सुमन्त्र को बड़ा गुस्सा आया। उसकी आँखें अंगारें उगलने लगीं। वह दान्त पीसने लगा। उसने कैकेयी से कहा—"दुष्टा फहीं की, तुमने उसी राजा को इतना दुख दिया है, जो तुम्हें अपने प्राणों से भी अधिक चाहता था। अब तुम और क्या कर सकती हो? तुम्हें देखकर तो ऐसा लगता है कि तुम पति का नाश करके ही रहोगी। इस वंश का नाश करके ही रहोगी। सबसे बड़े लड़के राम के पट्टाभिषेक पर तुम्हें क्या आपत्ति है? यदि भरत राज्य करेगा, तो तुम सोचती हो कि हम यहाँ रहेंगे। अयोध्या में क्या एक ब्राह्मण रहेगा? क्यों यह गन्दा काम कर रही हो? आखिर तुम अपनी माँ की बेटी कहलायी। तुम्हारे पिता अश्वपति ने एक मुनीश्वर से अपूर्व शक्ति पायी थी। उससे उन्होंने पशु और पक्षियों की भाषायें सीख लीं। जब वह एक बार पलंग पर लेटा हुआ था, तो जृम्भ नाम की चींटी ने जब कुछ कहा, तो वह हँस पड़ा। यह देख तुम्हारी माँ ने हँसी का कारण पूछा। तुम्हारे पिता ने कहा कि यदि मैंने बताया कि मैं क्यों हँसा था, तो मैं मर जाऊँगा। तुम मरो या जीओ। तुम मुझे देखकर नहीं हँसे, यह मैं कैसे जानूँ? इसलिये मुझे हँसने का कारण बताना ही होगा। तुम्हारी माँ ने हठ किया। तब तुम्हारे पिता ने उस मुनि के

पास आकर सलाह माँगी जिसने वर दिया था। "चाहे तुम्हारी पत्नी हठ करते करते मर जाये। तो भी हँसने का कारण न बताओ, मुनि ने सलाह दी। तब तुम्हारे पिता ने तुम्हारी माता को भेज दिया। और सुख से रहने लगा। तुम्हारा काम भी कुछ ऐसा ही मालूम होता है। जब राम पिता को छोड़कर वन चला जायेगा तो बड़ी आपत्ति आकर रहेगी। इसलिए तुम अपना हठ छोड़ो। और राम के पट्टाभिषेक के लिए मान जाओ।"

यह सुन कैकेयी का लज्जित होना तो अलग उसने सुमन्त्र का कहना अनसुना कर दिया। दशरथ ने सुमन्त्र से कहा—"राम के साथ जंगल में चारों सेनायें, विपुल धनराशि, सुन्दर स्त्रियाँ और माल के साथ व्यापारियों को भेजो। साथ गाड़ियाँ भी भेजो। राम को राज्य के न होने की कमी न अनुभव हो।"

सुमन्त्र के शाप को सुनकर जो टस से मस न हुई थी ऐसी कैकेयी, यह सुन सन्न हो गई। डर गई। उसने कहा—"महाराज, यदि अयोध्या छोड़कर चले गये तो भरत राज्य नहीं करेगा।"

"अरे, दुष्टा! मुझ पर इतना भार तो डाला ही अब बातों के कोड़े भी लगा रही हो। यह सब उन वरों के साथ ही जो माँग लेती।" दशरथ ने क्रुद्ध होकर कहा।

कैकेयी ने उससे भी अधिक क्रुद्ध होकर पूछा—"क्या यह सब मुझे अलग माँगना चाहिए था! वन में जाने का अर्थ ही है कि सब छोड़कर जाना। आपके पूर्वज सगर ने जब अपने लड़के असमंज को भेजा था, तो क्या उसके साथ सेना भी भेजी थी।"

दिया कि वे फिर कभी राज्य में कदम न रखें। जन द्रोही असमेज और जन प्रिय राम की कैसे तुलना की जा सकती है!"

इन बातों का कैकेयी पर कोई प्रभाव न हुआ। तब दशरथ ने कहा—"भले की बात तुम्हारे सिर में नहीं घुसेगी। मैं भी राम के साथ वन में जाऊँगा। तुम और भरत सुख से राज्य करो।"

राम यह सब सम्भाषण सुन रहे थे। उन्होंने पिता से कहा—"महाराज, जब मैं सब सुख छोड़कर जंगलों में कन्द मूल खाकर रहनेवाला हूँ तब मुझे सेना की क्या आवश्यकता है? हाथी का दान करके सूत के बारे में कंजूसी की बात छोड़ दीजिये। हमें वल्कल वस्त्र, और कन्द मूल उखाड़ने के उपकरण और एक टोकरा दिलवा दीजिये, बस, काफ़ी है।"

यह सुन सिद्धार्थ नाम के मन्त्री ने कहा—"क्यों आप असमेज की बात यहाँ लाती हैं! वह परम दुष्ट था। वह गलियों में खेलते बच्चों को उठा ले जाता और सरयू नदी में फेंककर उनको मरता देख खुश हुआ करता था। इसलिये नागरिकों ने जाकर राजा से कहा—"आप या तो असमेज को भेजते हैं या हमें नगर छोड़कर जाने के लिए कहते हैं! तब महाराजा ने जनद्रोही, अपने लड़के और उसकी पत्नी को और उसके नौकर चाकरों को राज्य से भेज दिया और प्रबन्ध कर

कैकेयी तो मान अभिमान कभी का छोड़ चुकी थी। उसने कहा—"लो अभी लाई, वल्कल वस्त्र" राम, लक्ष्मण ने अपने अच्छे वस्त्र उतार दिये। और पिता के सामने वल्कल वस्त्र पहिन लिए। पर सीता न जान सकी कि उनको कैसे पहिना

जाये। उसने राम की ओर देखा। फिर एक कपड़ा गले में लपेटकर, और दूसरा हाथ में रखकर, शर्माती, नीचे मुँह करके खड़ी हो गई। तब राम उसके पास गये। उसके हाथ से वल्कल वस्त्र लेकर उसकी रेशमी साड़ी के ऊपर उसे पहिना दिया।

यह सुन दशरथ की स्त्रियों ने आँसू बहाते हुए कहा—"बेटा, तुम पिता के वचन के अनुसार जंगल में जा रहे हो। परन्तु सीता को क्यों ले जा रहे हो! वह वनवास नहीं कर सकती। हमारे पास उसे छोड़ दो। तुम्हारे बदले हम उसे ही देखते रहेंगी।"

इस बीच वशिष्ठ ने कैकेयी से, जो तब सीता को वल्कल वस्त्र दे रही थी, कहा—"गुण हीना! तुम्हारे दुस्साहस की सीमा ही नहीं मालूम होती है। सीता के वन में जाने की क्या आवश्यकता है!

राम के लिए जिस पट्टाभिषेक की व्यवस्था की गई थी, उसी व्यवस्था से जानती हो, सीता का पट्टाभिषेक भी किया जा सकता है! सीता को यह वल्कल वस्त्र पहिनने की अवश्यकता नहीं है। यही नहीं, वह अपने साथ वाहन, वस्तुयें, वस्त्र, परिचारिकायें सब ले जा सकती है। तुम सोच रही हो कि भरत यह सब देखकर खुश होगा। तुम्हारा दुष्टतापूर्ण व्यवहार उसे बिल्कुल पसन्द न आयेगा। यदि वह अपने पिता का लड़का है, तो वह राम को वनवास के लिए जाता देख, पिता का व्यथित होना नहीं देखेगा।"

दशरथ ने सुना कि आस पास के लोग छी छी कर रहे थे। उन्होंने सीता को देखकर कहा—"सुकुमारी है, छोटी उम्र की है। सीता, मुनि पत्नी की तरह वल्कल

वस्त्र पहिनकर किस तरह सोह रही है। वह वल्कल वस्त्र नहीं पहिनेगी।"

राम ने पिता से कहा कि वे उनकी माता, कौशल्या की रक्षा करें। दशरथ ने सुमन्त्र से कहा—"अच्छे घोड़ोंवाले, अच्छे रथ में इन्हें बिठाकर नगर से बाहर अरण्य में छोड़ आओ।" कोशाधिकारी को बुलाकर कहा—"इतनी साड़ियाँ और आभूषण लाओ कि वे सीता के लिए चौदह वर्ष तक काफ़ी हों।"

सीता अपने को इस तरह अलंकृत करने लगी जैसे विवाह के लिए जा रही हो। यह देख कौशल्याने उसका आलिंगन कर लिया। "सीता, तुम्हारा पति गरीब हो गया है। यह देख वन में उसकी देखभाल में लापरवाही न करना।" उसने सीता को समझाया।

राम ने माता पिता की प्रदक्षिणा करके नमस्कार किया। माता से उसने कहा—"माँ, शोक न करो, पिताजी की परवाह करो। चौदह वर्ष बीतते कितना समय लगता है! आँख बन्द करके, खोलेंगे कि नहीं इतने में चौदह साल हरिण हो जायेंगे। लक्ष्मण ने भी माँ बाप को नमस्कार किया। फिर अपनी माता सुमित्रा के पास जाकर उससे विदा ली। उसने लक्ष्मण से कहा—"लक्ष्मण, अब राम ही तुम्हारा पिता है। सीता तुम्हारी माता है। अरण्य ही अयोध्या है। देखना कि भाई पर कोई आपत्ति न आये।

तीनों बाहर आये। सीता ने तो इस तरह कपड़े पहिन रखे थे जैसे वह दुल्हिन हो। वह पहिले पहल जाकर रथ में बैठ गई, जैसे वनवास की कोई चिन्ता ही न हो। फिर राम लक्ष्मण रथ में जा बैठे। सुमन्त्र ने रथ में, दशरथ के दिये हुए वस्त्र, आभरण, आयुध, कवच, फावड़ा और टोकरे आदि रख दिये। तब रथ हिला।

३. खियाप्स पिरामिड़

पिरामिड़ संसार में प्रसिद्ध है और उनमें सबसे बड़ा खियाप्स पिरामिड़ है। इसका निचला भाग, चाहे जिस तरफ से भी देखा जाये ७४६ फीट है और इसका क्षेत्रफल १३ एकड़ है। इसकी ऊँचाई ४५० फीट है। २३ लाख ढाई टन के भारी पत्थर इसके बनाने में उपयुक्त हुए है। यह मिश्र में है।
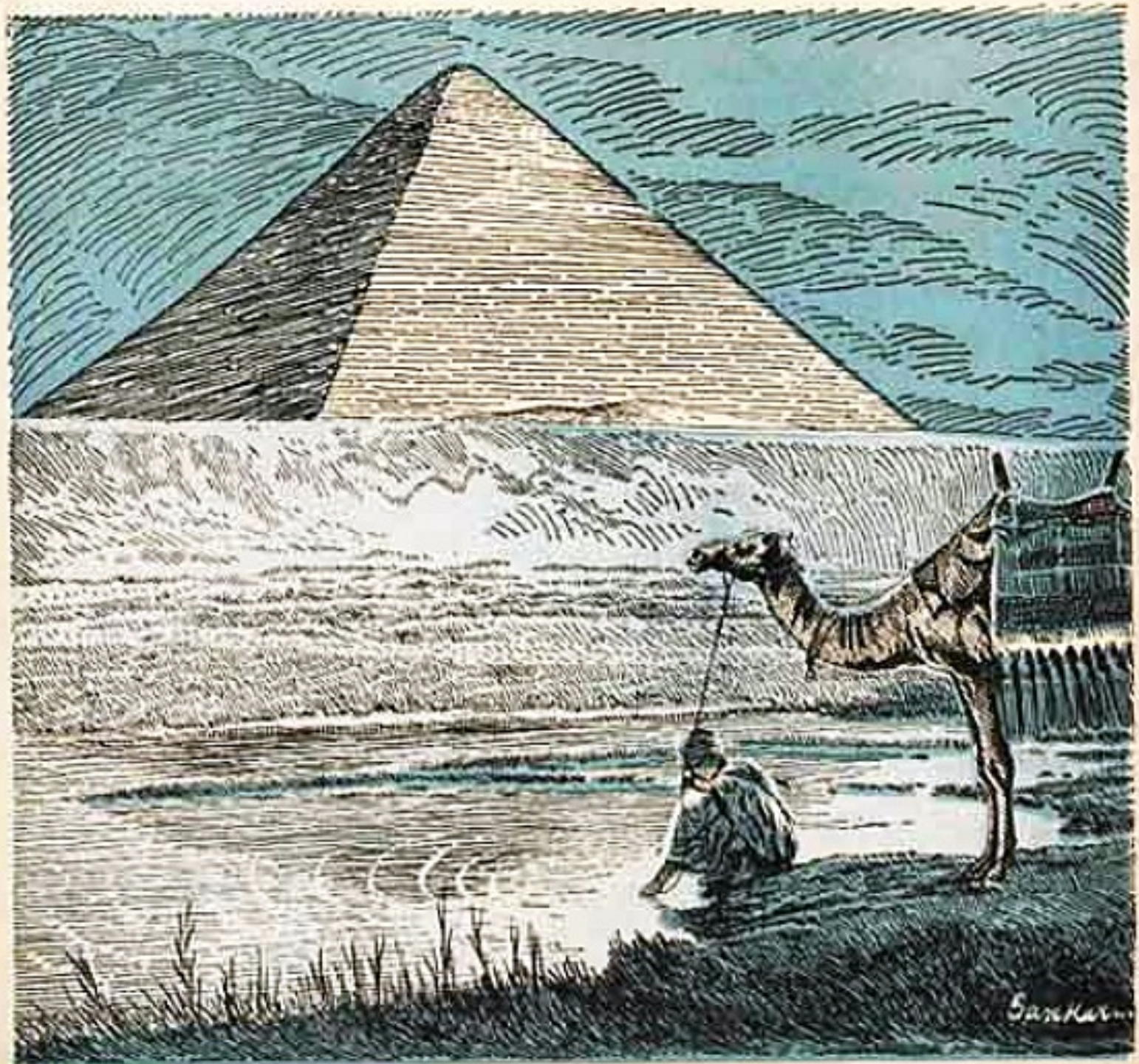
१. एस. नागराज, वाराणसी

क्या आप दीपावली अंक की तरह होली का भी अंक निकालेंगे ?

भाई अभी तो कोई इरादा नहीं है।

२. कृत्तिवास नायक, बिलासपुर

क्या आप फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता में जीतनेवाले को "चन्दामामा" में छपने से पहिले ही सूचित कर देते हैं ?

नहीं।

३. दिग्विजय सिंह, नागपुर

"चन्दामामा" में प्रकाशित बेताल कथाएँ कब तक पुस्तकाकार में मिल सकेंगी ?

अभी कहना मुश्किल है।

४. सत्यनारायण शर्मा, दोचाई

क्या आपने "पाठकों के मत" नामक स्तम्भ बन्द कर दिया है ?

नहीं, तो।

"भारत का इतिहास" पूरा प्रकाशित करेंगे ?

अभी तो यही इरादा है।

५. बलवन्त सिंह, हैदराबाद

मैंने सुना है कि अंग्रेज़ी चन्दामामा केवल मद्रास में ही चलता है, क्या यह सच है ?

यह सच नहीं है!

६. केशव सिंह, लखनऊ

जो व्यक्ति एक साल के लिए "चन्दामामा" का ग्राहक बनता है, उसको आप केलेन्डर क्यों नहीं देते हैं?

छापेंगे तो देने की ज़रूर सोचेंगे!

७. बाबुलाल गुप्ता, अगू

क्या आप एक ही नाम से एक से अधिक "चन्दामामा" पृथक पृथक पते पर भेज सकते हैं?

यदि आप यह जानना चाह रहे हैं, कि एक व्यक्ति एक से अधिक पाठकों के लिए भेज सकता है कि नहीं, तो हम कहेंगे, अवश्य।

८. शिवदत्त शर्मा, शहादरा

क्या आपने "विचित्र जुड़वाँ" की तरह और भी कोई बड़ी कहानी छपवाई है—"विचित्र जुड़वाँ" हमें कहाँ से मिल सकती है?

पुस्तकाकार में तो यही एक छपी है, और यह "चन्दामामा" के दफ्तर से मँगाई जा सकती है।

९. मदनलाल शर्मा, वाराणसी

"चन्दामामा" किन किन देशों में बिकने जाया करता है?

प्रायः सभी देशों में, जहाँ हिन्दी, तेलुगु, तमिल, कन्नड, मराठी और गुजराती के समझने पढ़नेवाले रहते हैं।

१०. भगवानदास, फेजाबादा

क्या आप एजेन्टस् के पास पहिले "चन्दामामा" भेजते हैं, उसके बाद वार्षिक ग्राहकों के पास?

नहीं, सब एक साथ भेजे जाते हैं।

११. नियति, मद्रास

चन्दामामा में आप दाक्षिणात्य साहित्य क्यों नहीं देते?

क्योंकि यह साहित्यिक पत्रिका नहीं है।

Photo by P. V. Subramanyam

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

दीपक देता ज्योति दान!

प्रेषिका :
शान्ती देवी, मथुरा

Photo by K. N. Malli
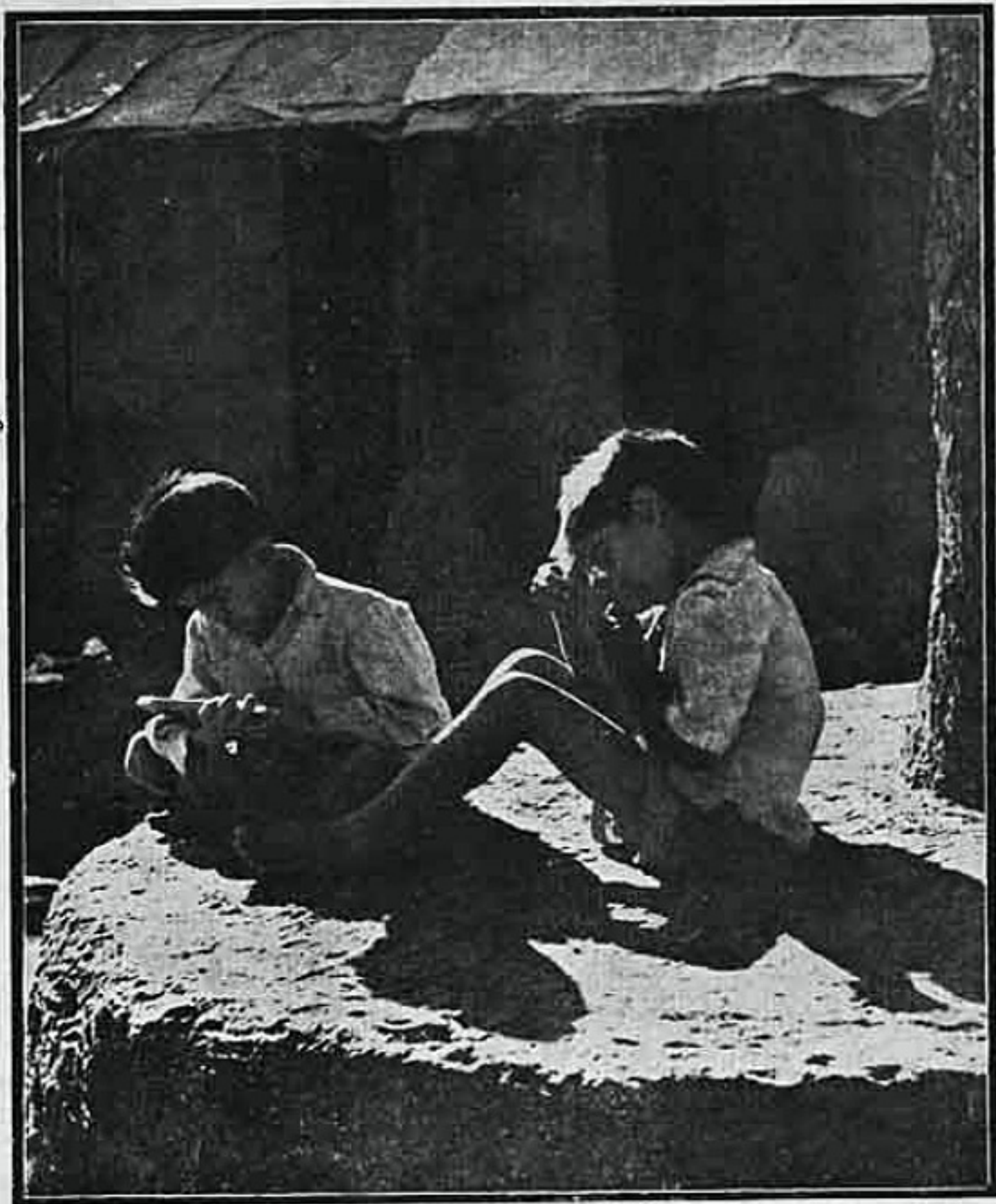
पुरस्कृत परिचयोक्ति

विद्या से मिलता है ज्ञान !!

प्रेषिका : शान्ती देवी, मथुरा

यह नहीं होगा ★ [रामतीर्थ कथा]

एक धनी ने बड़ी मेहनत से कई बक्से सोने के जमा किये। एक दिन एक सन्यासी ने उसके पास आकर पूछा—"क्यों सोने को लकड़ी के और लोहे के बक्सों में जमा कर रहे हो?"

"स्वामी, आप जैसों को जहाँ चाहें, वहाँ भीख मिल जाती है। यदि हम जैसे गृहस्थी को फाके करने पड़ जायें तो क्या हो? इसलिए पहिले ही सावधान रहना पड़ता है।" धनी ने कहा।

सन्यासी ने यह बात सुन ली और बिना कुछ कहे चला गया। उसी दिन शाम को धनी, सन्यासी के कुटीर में गया। सन्यासी एक गढ़ा खोद रहा था। पास ही कँकड़ों का ढेर था।

"स्वामी जी, आप क्या कर रहे हैं?" धनी ने पूछा।

"देखो, ये कँकड़ कितने सुन्दर हैं। मैं इन्हें रख रहा हूँ। कभी भी इनसे काम पड़ सकता है।" सन्यासी ने कहा।

"यह क्या स्वामी! पहाड़ में जहाँ देखो, ये ही पत्थर हैं, इनके रखने की क्या जरूरत है?" धनी ने कहा।"

"यदि तूफ़ान में पहाड़ बह बहा गये तो?" सन्यासी ने पूछा।

"यह तो नहीं होगा, यह तो आप भी जानते हैं।" धनी ने कहा।

"मूर्ख, क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हें कभी फाका नहीं करना पड़ेगा। उतना सोना तुमने क्यों इकट्ठा किया?" सन्यासी ने धनिक से पूछा।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

मई १९६२ :: पारितोषिक १०)
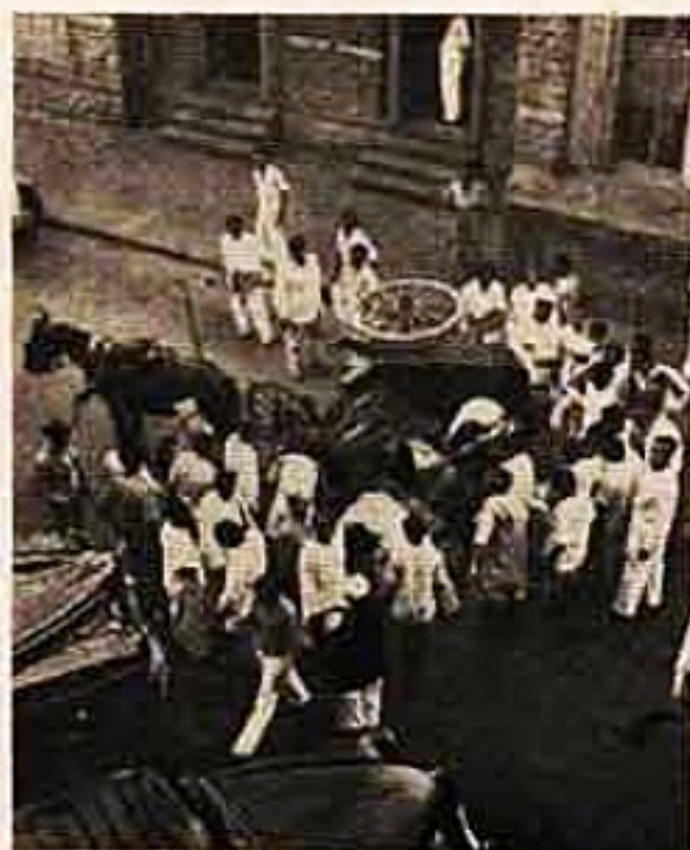
कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिख कर निम्नलिखित पते पर तारीख ७ मार्च १९६२ के अन्दर भेजनी चाहिए।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वड़पलनी, मद्रास-२६

मार्च – प्रतियोगिता – फल

मार्च के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं।
इनके प्रेषक को १० रु. का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो : दीपक देता ज्योति दान !

दूसरा फ़ोटो : विद्या से मिलता है ज्ञान !!

प्रेषिका : शान्ती देवी,

C/O बनवारीलाल, घर नं. २०३४/1 अम्बाखार, मथुरा (यू. पी)

अन्तिम पृष्ठ

अश्वत्थामा, जो पाण्डवों के शिविर के द्वार के सामने खड़े भूत को जीत न पाया था। निरायुध हो, शिव का ध्यान करने लगा। शिव की कृपा से एक सुवर्ण वेदिका बाहर निकली। उसमें अग्नि जलने लगी। और ज्वालायें निकलने लगीं।

अश्वत्थामा ने शिव का ध्यान किया। और प्रार्थना की कि शिव उसके शत्रुओं को निर्मूल कर दे। फिर वह अग्नि में कूद पड़ा। तब शिव ने प्रत्यक्ष होकर कहा—"तुम्हारी परीक्षा के लिए ही मैंने भूत की सृष्टि की थी। तुम्हारे शत्रुओं का समय हो गया है। उनका संहार करो।" उसने अश्वत्थामा को एक तलवार दी। और उसमें स्वयं प्रविष्ट हो गया।

अश्वत्थामा ने शिविर के द्वार पर कृपा और कृतवर्मा को खड़ा किया। और उनसे कहा कि वे किसी को अन्दर न आने दें। वह स्वयं शिविर में घुसा। योद्धा सब गाढ़ निद्रा में थे। अश्वत्थामा पहिले धृष्टद्युम्न की जगह गया। वह गद्दों पर मजे में सो रहा था। अश्वत्थामा ने उसे लात मारी। धृष्टद्युम्न ज्यों ही उठ रहा था, त्यों ही, उसने उसके बाल पकड़कर, क्रूरता से उसकी हत्या कर दी।

अश्वत्थामा, वहाँ से जो निकला तो सब जगह सबको मारता चला। उसने उनको मारा जो सो रहे थे। और उनको भी, जिन्होंने उठकर उस पर वार किया था। किसी को न छोड़ा। उसके हाथों उत्तमौज, और यधामन्यु भी मारे गये। उसका सारा शरीर खून से लथपथ था। वह देखने में राक्षस सा, भूत-सा लगता था। कई उसको देखकर भाग गये।

प्रतिबिन्ध्य, सुतसोम, नकुल का लड़का शतानीक, शिखण्डी, विराट के लड़के, पोते, द्रौपदी के लड़के, हजारों पांचाल, सृंजय योद्धा, उससे लड़कर मारे गये। कई ने डर में, शिविर से भागने की कोशिश की। परन्तु उनको कृपा और कृतवर्मा ने मार दिया। यही नहीं, अश्वत्थामा के लिए रोशनी रहे, यह सोच उन्होंने पाण्डव शिविर के तीनों दिशाओं में आग जला दी।

आधी रात से पहिले, अश्वत्थामा ने बचे हुए, योद्धाओं, हाथियों, घोड़ों को मार दिया। यदि उस दिन रात को पाण्डव वहाँ होते, तो यह हत्याकाण्ड होता ही न।

अश्वत्थामा की प्रतिज्ञा पूरी हुई। उसने अपने पिता की हत्या का बदला ले लिया, और दुर्योधन को दिये हुए वचन को भी पूरा कर लिया। उसने कृप, और कृतवर्मा को भी जाकर कहा कि उसका काम पूरा हो गया था। उन्होंने उसे गले लगाया, और बताया कि जो उसके हाथ से छूट गये थे उनको उन्होंने मार दिया था। अश्वत्थामा ने कृप, और कृतवर्मा से कहा—"हम यह जाकर राजा से कहें। यदि वह अभी जीवित हैं तो"

Printed by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press Private Ltd., and Published by B. VENUGOPAL REDDI for Sarada Binding Works,

आशा पारेख से सुनिये एक रहस्य की बात...

'लक्स से मेरा रंगरूप निखर आता है!'

'रंग ऐसे छबीले...साबुन ऐसा मुलायम'

आशा पारेख कहती हैं

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

LTS. 108-X29 HI